सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_Sanjay YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्ष: 8 ● अंक: 160 ● पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, शनिवार, 16 जुलाई, 2022
मूल्य ₹ 3/-

अगर मैं पहले से कोई अंतिम लक्ष्य बनाकर चलता तो क्या आपको नहीं लगता है कि मैं उसे सालों पहले पूरा कर चुका होता।

-बिल गेट्स

राष्ट्रपति चुनाव: निर्वाचन आयोग की विशेष... 8 | अपने ही बुने जाल में फंसते जा... 3 | प्रदेश सूखे की चपेट में, टोटके कर... 7

मोदी और योगी के सपनों का बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे हुआ शुरू

पीएम ने किया लोकार्पण, कहा, हम गढ़ रहे देश का भविष्य

» भाजपा की डबल इंजन सरकार मेहनत से भविष्य को बेहतर करने में जुटी

» यूपी नए संकल्पों को लेकर अब तेज गति से दौड़ने को तैयार

» सीएम योगी के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश की बदल रही है तस्वीर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

जालौन। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जालौन के कैथरी गांव में आज चित्रकूट से इटावा तक 14850 करोड़ रुपये की लागत से बने 296 किलोमीटर लंबे बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे का लोकार्पण किया। इस मौके पर उन्होंने एक जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि विकास की जिस धारा पर आज देश चल रहा है उसके मूल में दो पहलू हैं। एक है इरादा और दूसरा है मर्यादा। हम देश के वर्तमान के लिए नई सुविधाएं ही नहीं गढ़ रहे बल्कि देश का भविष्य भी गढ़ रहे हैं।

उन्होंने कहा कि हम समय की मर्यादा का पालन कैसे करते हैं, इसके अनगिनत उदाहरण यूपी में ही हैं। काशी में विश्वनाथ धाम के सुंदरीकरण का काम हमारी ही सरकार ने शुरू किया और हमारी सरकार ने पूरा किया। गोरखपुर एम्स का शिलान्यास भी हमारी सरकार ने किया और उसका लोकार्पण भी हमारी सरकार में हुआ। दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेस-वे का शिलान्यास और लोकार्पण दोनों हमारी सरकार में हुआ। बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे भी इसी का उदाहरण है। इसका काम अगले साल फरवरी में पूरा होना था लेकिन ये 7-8 महीने पहले ही सेवा के लिए तैयार है।

पानी की हर बूंद रहेगी संरक्षित

एक्सप्रेस-वे पर हर 500 मीटर पर वाटर हार्वेस्टिंग के लिए रिवर्स बोरिंग की गई है। बारिश का पानी पक्की नालियों से 15 मीटर लंबे और तीन मीटर चौड़े तथा तीन मीटर गहरी ट्रेंच में जाएगा। यहां से 50-50 फीट गहराई में रिवर्स बोरिंग से पानी भूगर्भ में समा जाएगा।

पेड़ों की छाया में होगा पूरा सफर

एक्सप्रेस-वे पर चित्रकूट से दिल्ली छह घंटे का सफर पेड़ों की छाया में होगा। पूरे एक्सप्रेस-वे पर 13 लाख 79 हजार पौधे लगाने की तैयारी है यानी हर किलोमीटर पर औसतन 4658 पौधे लगेंगे। इनमें पीपल, बरगद आदि के पेड़ होंगे।

6 टोल प्लाजा, 4 लेन, अब 6 घंटे में दिल्ली से चित्रकूट

बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे के बन जाने से चित्रकूट, बांदा, महोबा, हमीरपुर और जालौन के लोगों के लिए दिल्ली का सफर आसान हो जाएगा। एक्सप्रेस-वे पर 250 से ज्यादा छोटे पुल, 15 से ज्यादा फ्लाईओवर, 6 टोल प्लाजा और 12 से ज्यादा बड़े पुल और 4 रेल पुल बनाए गए हैं। 24 घंटे पुलिस पेट्रोलिंग और एंबुलेंस की सुविधा भी उपलब्ध कराई जाएगी। इसकी लंबाई 296 किमी है। चार लेन एक्सप्रेस-वे को 6 लेन तक बढ़ाया जा सकता है। अभी तक चित्रकूट से दिल्ली पहुंचने में 12 से 14 घंटे का समय लगता था। दावा है कि एक्सप्रेस-वे के रास्ते चित्रकूट से दिल्ली तक का सफर केवल 6 घंटे में पूरा हो जाएगा। 4 पेट्रोल पंप भी बनाए जाएंगे। वहीं छह महीने तक टोल के लिए लोगों को जेब ढीली नहीं करनी पड़ेगी।

अर्थव्यवस्था को मिलेगा नया आयाम : योगी

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि आज बुंदेलखंड के लिए ऐतिहासिक दिन है। बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे उत्तर प्रदेश और बुंदेलखंड की अर्थव्यवस्था को एक नया आयाम प्रदान करेगा। कोरोना महामारी के बावजूद समयबद्ध ढंग से इस कार्यक्रम को करते हुए 28 माह के अंदर 296 किमी. लंबे एक्सप्रेस-वे को तैयार किया गया है। बुंदेलखंड को विकास और जनसुविधाएं मिल रही हैं। हर गरीब को ग्रामीण आवासीय अभिलेख उपलब्ध कराए गए हैं। एक्सप्रेस-वे बुंदेलखंड के विकास की धुरी बनेगा।

सरकार बदली है, मिजाज भी बदला है, ये मोदी हैं, ये योगी हैं

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि एक समय था जब माना जाता था कि यातायात के आधुनिक साधनों पर पहला अधिकार सिर्फ बड़े-बड़े शहरों का ही है लेकिन अब सरकार भी बदली है, मिजाज भी बदला है। ये मोदी है, ये योगी है। पुरानी सोच को पीछे छोड़कर हम एक नए तरीके से आगे बढ़ रहे हैं।

तस्वीर बदल रही है। सीएम योगी के नेतृत्व वाली सरकार में कानून व्यवस्था भी सुधरी है और कनेक्टिविटी भी तेजी से सुधर रही है। आजादी के बाद के सात दशकों में उत्तर प्रदेश में जितना काम हुआ उससे ज्यादा काम आज योगी सरकार कर रही है। उन्होंने कहा कि आज देश को यूपी पर गर्व हो रहा है। इस एक्सप्रेस-वे के बगल में जो स्थान हैं, वहां बहुत सारे किले हैं। मैं योगी सरकार से कहूंगा कि इन किलों को देखने के लिए एक शानदार टूरिज्म सर्किट बनाएं। यूपी नए संकल्पों को लेकर अब तेज गति से दौड़ने के लिए तैयार हो चुका है। यही सबका साथ, सबका विकास है। यूपी के छोटे-छोटे जिले हवाई सेवा से जुड़ें, इसके लिए भी तेजी से काम किया जा रहा है। ये एक्सप्रेस-वे सिर्फ वाहनों को गति नहीं देगा बल्कि ये पूरे बुंदेलखंड की औद्योगिक प्रगति को गति देगा।

सात जिले सीधे जुड़े

चित्रकूट से लेकर इटावा तक 296 किलोमीटर लंबे बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे से सात जिलों का कायाकल्प होगा। इससे चित्रकूट, बांदा, महोबा, हमीरपुर, जालौन, औरैया और इटावा जिले सीधे जुड़ेंगे।

देश की सियासत से हटाना है रेवड़ी कल्चर

पीएम मोदी ने विपक्ष पर निशाना साधते हुए कहा कि आजकल देश में मुफ्त की रेवड़ी बांटकर वोट बटोरने का कल्चर लाने की कोशिश हो रही है। ये रेवड़ी कल्चर देश के विकास के लिए बहुत घातक है। इससे देश के लोगों को बहुत सावधान रहना है। डबल इंजन की सरकार मुफ्त की रेवड़ी बांटने का शॉर्टकट नहीं अपना रही है बल्कि मेहनत करके राज्य के भविष्य को बेहतर बनाने में जुटी है। उन्होंने कहा कि रेवड़ी कल्चर वाले कभी आपके लिए नए एक्सप्रेस-वे नहीं बनाएंगे, नए एयरपोर्ट या डिफेंस कॉरिडोर नहीं बनाएंगे। रेवड़ी कल्चर वालों को लगता है कि जनता जनार्दन को मुफ्त की रेवड़ी बांटकर खरीद लेंगे। हमें मिलकर उनकी इस सोच को हराना है, रेवड़ी कल्चर को देश की राजनीति से हटाना है।

उत्तराखंड में कांग्रेस ने किया अग्निपथ योजना का विरोध

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

देहरादून। अग्निपथ योजना के खिलाफ कांग्रेस लगातार हमलावर मोड में है। इसे लेकर लगातार प्रदर्शनों का दौर कई जिलों में जारी है। इसी कड़ी में कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत ने अग्निपथ योजना के विरोध में अल्मोड़ा में पदयात्रा निकाली। वहीं पदयात्रा के बाद पंत पार्क में एक जन सभा का आयोजन किया गया, जहां हरीश रावत ने अग्निपथ योजना को लेकर मोदी सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने अग्निपथ योजना से सैनिक कहलाने का हक छीनने की बात कही।

रावत ने कहा उत्तराखंड सैनिकों से भरा पड़ा है, यहां सैनिक, रिटायर्ड सैनिक कहलाकर भारत की सुरक्षा करने वाले वीर गौरवान्वित होते हैं। केंद्र की मोदी सरकार ने देश की सीमाओं पर जान जोखिम में डालने वाले वीर जवानों से सैनिक कहलाने का हक छीन लिया है। अब भारत की रक्षा करने वाले सैनिक नहीं, अग्निवीर कहलाएंगे। हरीश ने कहा कि जब से भाजपा सत्ता में आई है नौजवानों के पास बेरोजगार नहीं है। महंगाई चरम पर है। केंद्र व प्रदेश सरकार दोनों ने इस प्रदेश को गर्त में डुबो दिया। उन्होंने जनता से भाजपा के बहकावे में न आने की बात कही।

स्वस्थ एवं प्रदूषण मुक्त बनेगा पूरा प्रदेश : एके शर्मा

सरकार ने नागरिक सुविधाओं पर किया फोकस

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। नगर विकास मंत्री एके शर्मा ने कहा कि प्रदेश सरकार स्वस्थ एवं प्रदूषण मुक्त शहर बनाने की दिशा में काम कर रही है। शहरों का नवीकरण एवं आधुनिकीकरण किया जा रहा है। सरकार ने नागरिक सुविधाओं पर विशेष फोकस किया है। सरकार का ज्यादा ध्यान ई-गवर्नेंस पर है। इसके अलावा उन्होंने बताया कि अब शहरों में सीवर व पेयजल कनेक्शन के लिए लोगों को दफ्तरों में भटकने की जरूरत नहीं है, केवल ऑनलाइन आवेदन करने पर कनेक्शन मिल जाएगा। ऑनलाइन आवेदन से विलंब से कनेक्शन देने वाले अधिकारियों की जवाबदेही भी होगी।

प्रदेश सरकार के 100 दिन पूरा होने के मौके पर लोक भवन में मंत्री ने अपने विभाग की उपलब्धियां बताईं। उन्होंने बताया कि बाजार व भीड़भाड़ वाले स्थानों में सुबह पांच बजे से आठ बजे तक सफाई अभियान चलाया जा रहा है।

इसकी निगरानी स्थानीय निकाय निदेशालय में स्थापित डेडीकेटेड कंट्रोल एंड कमांड सेंटर के जरिए ऑनलाइन की जा रही है। एके शर्मा ने कहा, नागरिकों की समस्याएं समय पर निस्तारित करने के लिए संभव पोर्टल शुरू किया है। शिकायतों के लिए टोल फ्री नंबर 1533 शुरू किया गया है। प्रदेश के 17 नगर निगम 102 छोटी नगरीय निकायों को अपने संसाधन उपलब्ध कराएंगे। उन्होंने बताया कि अमृत सरोवर व अमृत उद्यान योजना के अच्छे परिणाम सामने आ रहे हैं। लखनऊ का हैवतमऊ मवैया झील एक माडल के रूप में विकसित किया जा रहा है। यहां पहले गंदे नाले बहते थे। इस बार शहरों में नाले की सफाई की निगरानी ड्रोन से की गई है। उन्होंने बताया कि नगर विकास विभाग प्लास्टिक के खिलाफ जन-जागरूकता अभियान चला रहा है।

मंत्री के मुकदमे में नहीं आया गवाह

मामले की अगली सुनवाई 22 को

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। केंद्रीय मंत्री प्रोफेसर एसपी सिंह बघेल के खिलाफ चल रहे छह साल पुराने मुकदमे में गवाह नहीं आया। अदालत ने मामले में अगली सुनवाई के लिए अब 22 जुलाई की तारीख नियत की है। केंद्रीय मंत्री की ओर से उनके अधिवक्ता केके शर्मा और विजय कांत शर्मा ने हाजिरी माफी प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया। वहीं पूर्व सांसद प्रभु दयाल कठेरिया अदालत में हाजिर हुए। केंद्रीय विधि एवं न्याय राज्यमंत्री प्रोफेसर एसपी सिंह बघेल व अन्य के खिलाफ एत्मादपुर थाने में वर्ष 2016 मुकदमा दर्ज किया गया था। उन पर बिना अनुमति सभा करने का आरोप है।

पुलिस ने बघेल सहित अन्य आरोपितों के खिलाफ चार्जशीट अदालत में दाखिल की थी। मामले में केंद्रीय मंत्री ने आरोपों से डिस्चार्ज करने के लिए अदालत में प्रार्थना पत्र दिया था, जिसे इस वर्ष 12 मई को विशेष न्यायिक मजिस्ट्रेट एमपी/एमएलए अर्जुन ने सुनवाई के बाद खारिज कर दिया था। मामले में तत्कालीन है मोहर्रिर समेत कई लोगों की गवाही होनी है, शुक्रवार को गवाह पेश नहीं हुआ। इस पर विशेष न्यायिक मजिस्ट्रेट एमपी/एमएलए अर्जुन ने गवाही के लिए अब 22 जुलाई की तारीख नियत की है।

आज आपकी है कल हमारी सरकार होगी : हरक सिंह

बदले की राजनीति पर गोदियाल के बाद अब हरक भड़के

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

देहरादून। पिछली भाजपा सरकार में कैबिनेट मंत्री रहे हरक सिंह रावत इन दिनों लगातार सुर्खियों में बने हुए हैं। एक तरफ उनके बयानों के बाद हरीश रावत ने उनके खिलाफ मोर्चा खोल दिया है, तो दूसरी तरफ पुष्कर सिंह धामी सरकार द्वारा उन मामलों की जांच करवाई जा रही है, जो हरक के कार्यकाल में हुए। इससे नाराज हरक ने साफ शब्दों में चेतावनी देते हुए कहा है कि आज भले ही बीजेपी की सरकार हो, लेकिन कल वह फिर सरकार में आ सकते हैं, तो बदले की भावना से कोई कार्रवाई करना किसी के लिए फायदे की बात नहीं है।

उत्तराखंड की बीजेपी सरकार में मंत्री रहते हुए जिस कर्मकार कल्याण बोर्ड के विवाद के कारण हरक सिंह रावत चर्चाओं

में रहे, वह अब भी उनका पीछा नहीं छोड़ रहा है। हरक के कई करीबी उनके बीजेपी में रहते हुए ही हटा दिए गए थे। सरकार ने हाल में हरक की करीबी रहीं बोर्ड की तत्कालीन सचिव दमयंती रावत के खिलाफ जांच के आदेश दिए हैं। दमयंती पर वित्तीय अनियमितता के आरोप हैं। ऐसे में हरक सिंह का कहना है कि सरकार बदले की भावना से काम कर रही है और ऐसा हुआ तो इससे कोई नहीं बचेगा। इससे पहले कांग्रेस के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष गणेश और धामी सरकार में कैबिनेट मंत्री धन सिंह के बीच ऐसी खींचतान हो चुकी है।

प्रदेश में रोजगार मेला से मिलेगा छह लाख लोगों को लाभ : सचान

प्रदेश से निर्यात को बढ़ावा देने की कही बात

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में योगी सरकार दूसरे कार्यकाल के सौ दिन पूरे होने पर मंत्रीगण अपने विभाग के कार्य का ब्यौरा पेश कर रहे हैं। सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्यम, खादी एवं ग्रामोद्योग तथा हथकरघा एवं वस्त्रोद्योग मंत्री राकेश सचान ने अपने विभागों का ब्यौरा पेश किया। कैबिनेट मंत्री राकेश सचान ने बताया कि प्रदेश सरकार ने सौ दिन में रोजगार मेला लगाकर करीब छह लाख लोगों को लाभ , , दिया है।

सरकार का लक्ष्य प्रदेश से निर्यात को बढ़ावा देने से साथ ही कुशल श्रमिकों को पारंगत करने का भी है। उन्होंने कहा कि सीएम योगी आदित्यनाथ

की मौजूदगी में बीते दिनों लाखों लोगों को ऋण देकर उनके कार्य का विस्तार देने का भी बड़ा प्रयास किया गया है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मौजूदगी में प्रदेश में बड़े रोजगार मेले का आयोजन हुआ, जिससे लगभग छह लाख लोगों को लाभ रोजगार मिल रहा है और यह प्रक्रिया आगे भी जारी रहेगी। प्रदेश सरकार की बेहतर नीतियों तथा कानून-व्यवस्था के कारण अब यहां पर निवेश के अवसर तेजी से बढ़े हैं। भारत सरकार के उद्योग आधार पंजीकृत पोर्टल पर इस दौरान पंजीकृत प्रदेश में लगभग 1,20,000 नई एमएसएमई इकाइयां रजिस्टर्ड हुई हैं। एमएसएमई मंत्री राकेश सचान ने कहा कि प्रदेश में लघु इकाइयां भी लगाई गई हैं। इस वर्ष एमएसएमई इकाइयों का विस्तार होगा। बैंक से 80 हजार करोड़ रुपया का ऋण उपलब्ध कराकर 10 लाख इकाइयों की स्थापना कराने का लक्ष्य रखा गया है, जिससे इस साल करीब 30 लाख लोगों को रोजगार दिया जाएगा। प्रदेश में कानून व्यवस्था बेहतर होने के कारण अब निवेश बढ़ रहा है। अब तो नई एमएसएमई इकाइयों को 72 घंटे में अनुमति मिल रही है। इसके लिए सीएम योगी आदित्यनाथ ने सुविधा सेंटर का भी उद्घाटन किया है।

बामुलाहिजा

कार्टून: हसन जैदी

सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान के तहत हेलमेट बांटे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। शुभम सोती मेमोरियल ट्रस्ट ने अपने 12वें स्थापना दिवस पर उतरेठिया चौराहे पर सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान चलाया। अभियान के तहत लोगों को सड़क सुरक्षा व यातायात नियमों की जानकारी दी गई। शुभम सोती फाउंडेशन के अध्यक्ष आशुतोष सोती ने बैटरी रिक्शा व साइकिल रिक्शा पर रेडियम स्टीकर लगाकर उसका महत्व बताया। कार्यक्रम की शुरुआत मुख्य अथिति ट्रैफिक इंस्पेक्टर अतुल कुमार सिंह ने की। उन्होंने बैटरी रिक्शा के चारो ओर रेडियम स्टीकर लगाया व यातायात नियमों का पालन करने का लोगों से आग्रह किया।

इस दौरान शुभम सोती मेमोरियल ट्रस्ट ने राहगीरों को हेलमेट बांटे। इस

दौरान नितेश शुक्ला, शैलेंद्र शर्मा, चंद्रभूषण और शुभम सोती फाउंडेशन के उपाध्यक्ष अनवारुल अब्बासी और उनकी टीम ने यातायात पुलिस के साथ मिलकर यातायात को संचालित किया। कार्यक्रम में हीरोमोटो कॉर्प के सुमित मिश्रा सेफ्टी मैनेजर ने हेलमेट क्यों आवश्यक होता है इसकी जानकारी मौजूद सड़क से गुजर रहे लोगों को दी।

अपने ही बुने जाल में फंसते जा रहे राजभर!

राष्ट्रपति चुनाव में यशवंत सिन्हा को नहीं, द्रौपदी मुर्मू का करेंगे समर्थन

» न अखिलेश से बन रही, न बगावत थम रही, कर रहे बयानबाजी

» सपा को मेरी सलाह की जरूरत नहीं, इसलिए सलाह नहीं दूंगा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। ओम प्रकाश राजभर अपने ही सियासी भंवर में फंसते नजर आ रहे हैं। उत्तर प्रदेश विधान सभा चुनाव 2022 में खेला करने की चाहत से सपा प्रमुख अखिलेश यादव संग हाथ मिलाने वाले वाले राजभर का अब खुद सियासी खेल बिगड़ता दिख रहा है। समाजवादी पार्टी के मुखिया अखिलेश यादव के रुख का इंतजार कर रहे सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी यानी सुभासपा के मुखिया ने फैसला ले लिया है कि उनके छह विधायक राष्ट्रपति चुनाव में एनडीए की उम्मीदवार द्रौपदी मुर्मू को वोट देंगे। उन्होंने गठबंधन पार्टी सपा से अलग अपनी राह चुनी है।

उन्होंने सपा गठबंधन टूटने के कयास पर कहा कि गठबंधन में अभी तो हैं, जब तक वो रखेंगे। आगे टाइम आएगा तो बताएंगे। हम उनसे अलग नहीं हैं। वो कह रहे है कि आप अपनी पार्टी के मालिक, हम अपनी पार्टी के मालिक है। सपा को मेरी सलाह की जरूरत नहीं, इसलिए सलाह नहीं दूंगा। वहीं उनके ही पार्टी के लोगों का कहना है कि फिलहाल एक ओर न तो उनकी अखिलेश यादव से बन रही है और न ही पार्टी में बगावत थम रही है। ऐसे में यूपी चुनाव से ठीक पहले भाजपा से रिश्ता तोड़कर सपा के साथ आने वाले ओम प्रकाश राजभर खुद सियासी भंवर में फंसते नजर आ रहे हैं। दरअसल अखिलेश यादव और सुभासपा प्रमुख ओम प्रकाश राजभर के बीच जितनी मिठास यूपी चुनाव से पहले थी, अब दोनों के बीच उतनी ही खटास दिखाई देने लगी है। नौबत तो यहां तक आ गई है कि राजभर अखिलेश के खिलाफ बयानबाजी भी करने लगे हैं। बीते कुछ समय से जिस तरह के सियासी घटनाक्रम देखने को मिल रहे हैं, ऐसे में यह कहा जा सकता है कि अब दोनों के बीच गठबंधन भी केवल कहने भर का रह गया है। राजभर के पार्टी के ही लोग बताते हैं कि एक ओर जहां सपा से गठबंधन में दरार पड़ती दिख रही है, वहीं सुभासपा में बगावत की आंच और तेज होने लगी है। राजभर के पुराने साथी शशि प्रताप सिंह ने राजभर पर परिवारवाद का आरोप लगाया है और कहा कि सुभासपा में भी भाई-भतीजावाद को बढ़ावा दिया जा रहा है। सुभासपा के नेता अपने प्रियजनों को बढ़ावा दे रहे हैं।

सपा को खुद से तलाक नहीं देंगे राजभर

ओमप्रकाश राजभर का भाजपा के रात्रिभोज में जाना इसलिए सियासी नजरिए से अहम है क्योंकि अखिलेश यादव का खेमा विपक्ष के उम्मीदवार यशवंत सिन्हा का समर्थन कर रहा है। इस वजह से ओपी राजभर की समाजवादी पार्टी से तल्खी के बीच भाजपा से नजदीकी की भी चर्चा हो रही है। हालांकि ओपी राजभर ने स्पष्ट कर दिया है कि वह अपनी ओर से गठबंधन का रिश्ता नहीं तोड़ेंगे। ओपी राजभर यहां तक कह रहे हैं कि वे तलाक नहीं देंगे। अगर देना ही है तलाक तो खुद अखिलेश यादव दे दें।

रिश्तों में तल्खी का यह है बड़ा कारण

विधान सभा चुनाव 2022 में समाजवादी पार्टी गठबंधन को मिली हार के बाद ओम प्रकाश राजभर को अखिलेश यादव की ओर से उतनी तवज्जों नहीं मिली, जितनी की अपेक्षा सुभासपा प्रमुख को थी। सियासी जानकारों का मानना है कि यूपी चुनाव के बाद राज्य सभा चुनाव और एमएलसी यानी विधान परिषद चुनाव में सपा गठबंधन में सुभासपा को तरजीह नहीं दी गई। वहीं विधान परिषद चुनाव में भी ओपी राजभर को उस वक्त झटका लगा, जब उनके बेटे को टिकट नहीं मिला।

राजभर की पार्टी में ही बजा बगावत का बिगुल

वर्तमान में राजभर सियासी चक्रव्यूह में फंसते हुए दिखाई दे रहे हैं। दरअसल, सपा प्रमुख अखिलेश यादव से जगजाहिर तल्खी के बीच उनकी अपनी पार्टी में ही बगावत का बिगुल बज गया है। राजभर खुद इस बात से टेंशन में हैं मगर अपनी बात कह नहीं पा रहे हैं। सुभासपा के उपाध्यक्ष शशि प्रताप सिंह ने ओम प्रकाश राजभर पर गंभीर आरोप लगाते हुए उनका साथ छोड़ दिया है। यही नहीं, उन्होंने अपनी पार्टी तक बना ली। शशि प्रताप सिंह का साथ छोड़ना ओपी राजभर के लिए किसी बड़े झटके से कम नहीं है। शशि प्रताप सिंह चुपचाप पार्टी से चले जाते तो एक बात होती मगर उन्होंने ओपी राजभर के खिलाफ कई गंभीर आरोप लगाकर और खुद की राजनीतिक संगठन राष्ट्रीय समता पार्टी की घोषणा कर राजभर के लिए मुश्किल पैदा कर दी है।

100 सीट पर प्रभाव, चार फीसदी है यूपी में वोट बैंक

यूपी की राजनीति में दबदबा रखने वाली पिछड़ी जातियों में राजभर समाज करीब चार फीसदी है। 403 विधान सभा सीटों में सौ से अधिक सीटों पर राजभर समाज का ठीक-ठाक वोट है। वाराणसी, जौनपुर, चंदौली, गाजीपुर, आजमगढ़, देवरिया, बलिया, मऊ आदि जिलों की सीटों पर 20 फीसदी वोट राजभर का ही माना जाता है। अयोध्या, अंबेडकरनगर, गोरखपुर, संतकबीरनगर, महराजगंज, कुशीनगर, बस्ती, बहराइच, सिद्धार्थनगर, बलरामपुर और श्रावस्ती में भी 10 फीसदी तक राजभर समाज के वोटर हैं।

लोक सभा चुनाव: भाजपा को सियासी चुनौती देने की तैयारी में कांग्रेस, बनायी रणनीति

» भारत जोड़ो अभियान से देश भर में चलाएगी जनसंपर्क अभियान

» भाजपा विरोधी दलों को भी साथ लाने की कर रही कवायद

» चुनाव से पहले विपक्षी दलों को एकजुट करने में जुटे नेता

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। लगातार दो लोक सभा और हाल में हुए विधान सभा चुनावों में शिकस्त खाने के बाद कांग्रेस एक बार फिर सियासी जंग लड़ने की तैयारी में जुट गयी है। भाजपा को टक्कर देने के लिए पार्टी ने देश के अधिकांश भागों में जनसंपर्क अभियान चलाने की रणनीति बनायी है। इसके तहत उसने आगामी अक्टूबर माह में भारत जोड़ो पदयात्रा शुरू करने का खाका तैयार किया है। यही नहीं इस यात्रा को प्रभावी बनाने के लिए उसने भाजपा विरोधी दलों को भी इस यात्रा में शामिल होने का न्यौता दिया है। इसके जरिए वह विपक्षी एकता को मजबूत करने पर काम कर रही है।

पिछले दिनों पार्टी नेतृत्व ने प्रदेश कांग्रेस अध्यक्षों के साथ बैठक की। इसमें तय किया गया कि भाजपा को जवाब देने के लिए कांग्रेस की भारत जोड़ो यात्रा अब पूरी तरह पदयात्रा होगी। यह यात्रा करीब 150 दिनों तक चलेगी। कांग्रेस नेता 12 राज्यों ओर दो केंद्र शासित प्रदेशों से होते हुए करीब 3500 किलोमीटर की पदयात्रा करेंगे। यही नहीं भाजपा के खिलाफ कांग्रेस के अब तक के सबसे बड़े जनसंपर्क अभियान से जुड़ने के लिए पार्टी ने समान विचाराधारा वाले दलों को इसमें शामिल होने का भी न्योता दिया है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्षों के साथ भारत जोड़ो यात्रा के संचालन के लिए बनाई गई पार्टी की केंद्रीय समिति के अध्यक्ष दिग्विजय सिंह और पार्टी के संचार महासचिव जयराम रमेश ने अन्य राजनीतिक दलों और नागरिक संगठनों को इसमें शामिल होने का खुला प्रस्ताव दिया। जयराम ने कहा कि बेशक यह कांग्रेस पार्टी की पदयात्रा होगी मगर जिस तरह आज देश का सामाजिक ताना-बाना और लोकतंत्र खतरे में है उसे देखते हुए हम समान विचारधारा वाले सभी राजनीतिक दलों और नागरिक संगठनों से अपील करते हैं कि वे भी हमारी पदयात्रा में शामिल हों। संसद में शब्दों को असंसदीय घोषित कर हमारी बोली पर पाबंदी लगाई जा रही है। भाषा, धर्म, जाति, खानपान के आधार पर समाज में विभाजन कर उसे तोड़ा जा रहा है और भाजपा की इस विभाजनकारी नीति के खिलाफ कांग्रेस का जवाब है भारत जोड़ो की यात्रा।

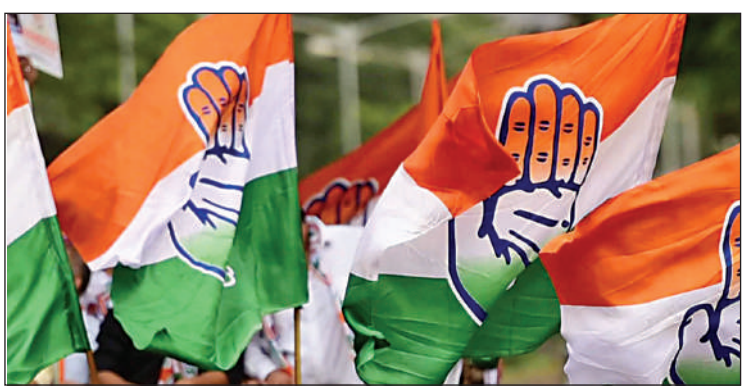

संकल्प शिविर में सोनिया ने किया था ऐलान

कांग्रेस के उदयपुर नव संकल्प शिविर में सोनिया गांधी ने दो अक्टूबर से भारत जोड़ो यात्रा निकालने की घोषणा की थी। प्रदेश कांग्रेस ईकाइयों को इसके लिए तैयारी करने को कहा गया है और उनका जवाब आते ही पदयात्रा शुरू करने की तारीखें घोषित कर दी जाएगी। इसमें कांग्रेस पार्टी का पूरा नेतृत्व और कार्यकर्ता भाग लेगा। इस यात्रा से पहले नौ से 15 अगस्त के बीच कांग्रेस देश के हर जिले में आजादी के 75 साल पूरा होने के मौके पर 75 किलोमीटर की पदयात्रा का आयोजन करेगी।

दो सौ सीटों पर भाजपा से सीधा मुकाबला

देश में 200 से अधिक लोक सभा सीट ऐसी हैं, जहां भाजपा से कांग्रेस का सीधा मुकाबला है और इनमें अधिकतर सीट हिंदी भाषी राज्यों से आती है. इसलिए कांग्रेस कोई कोर-कसर नहीं छोड़ना चाहती है।

जिद... सच की

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

सुरक्षा कवच के साथ सतर्कता भी

सवाल यह है कि वैक्सीन की दो डोज के बाद भी लोगों को बूस्टर डोज की जरूरत क्यों पड़ रही है? क्या कोरोना के लगातार बदलते रूप से हालात फिर से बिगड़ने लगे हैं? क्या अभी कुछ सालों तक लोगों को कोरोना के साथ जीने की आदत डालनी होगी? क्या बूस्टर डोज के बाद कोरोना से सुरक्षा की पुख्ता व्यवस्था हो जाएगी?

देश में बढ़ रहे कोरोना केसों के बीच केंद्र सरकार नागरिकों को एक और सुरक्षा कवच देने में जुट गयी है। इसके तहत सरकार ने 18 साल से ऊपर के सभी नागरिकों को मुफ्त में बूस्टर डोज देने का अभियान शुरू किया है। यह अभियान 75 दिनों तक चलेगा। यूपी में भी इसका आगाज हो चुका है और लोगों से बूस्टर डोज लगवाने की अपील की गयी है। सवाल यह है कि वैक्सीन की दो डोज के बाद भी लोगों को बूस्टर डोज की जरूरत क्यों पड़ रही है? क्या कोरोना के लगातार बदलते रूप से हालात फिर से बिगड़ने लगे हैं? क्या अभी कुछ सालों तक लोगों को कोरोना के साथ जीने की आदत डालनी होगी? क्या बूस्टर डोज के बाद कोरोना से सुरक्षा की पुख्ता व्यवस्था हो जाएगी? क्या कोरोना प्रोटोकॉल का पालन किए बिना महामारी से बचाव संभव है? तमाम हिदायतों के बावजूद लोग महामारी को लेकर गंभीर क्यों नहीं है? क्या एक और लहर देश की अर्थव्यवस्था को चौपट नहीं कर देगी?

करीब ढाई साल से कोरोना ने देश को अपनी चपेट में ले रखा है। अब तक पांच लाख से अधिक लोगों की जान कोरोना ले चुका है। ये वे आंकड़े है जो सरकारी दस्तावेजों में दर्ज हैं जबकि दूसरी लहर के दौरान तमाम लोगों ने इलाज नहीं मिलने के कारण दम तोड़ दिया था। कोरोना टीकाकरण के चलते तीसरी लहर उतनी गंभीर नहीं रही। देश की तमाम गतिविधियां संचालित रहीं। अब एक बार फिर कोरोना ने अपना नया रूप दिखाना शुरू कर दिया है। पिछले कुछ दिनों से प्रतिदिन 20 हजार नए केस सामने आए हैं। नया वैरिएंट बीए.4 और बीए.5 संक्रमण बढ़ा रहा है। यह वेरिएंट ब्रिटेन, जर्मनी, कनाडा और ऑस्ट्रेलिया में पाया गया है। विशेषज्ञों का कहना है कि इसे इंसान की रोग प्रतिरोधक क्षमता भी नहीं रोक पा रही है। इससे खतरा बढ़ गया है। लिहाजा लोगों की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए सरकार ने एक बार फिर बूस्टर डोज निशुल्क लगाने का निर्णय लिया है। इससे गरीबों को राहत मिलेगी और वे आसानी से बूस्टर डोज लगवा सकेंगे। हालांकि इसके पहले दस जनवरी से सरकार साठ साल और इसके ऊपर के लोगों को बूस्टर डोज निशुल्क लगा रही थी लेकिन अतिरिक्त डोज लगवाने वालों की संख्या बेहद कम रही है। 18 से 59 साल के केवल एक फीसदी लोगों ने बूस्टर डोज ली। वही लोगों ने कोरोना प्रोटोकॉल का पालन भी बंद कर दिया है। लोग न मास्क लगा रहे हैं न सोशल डिस्टेंसिंग का पालन कर रहे हैं। जाहिर है बूस्टर डोज के लिए सरकार को जागरूकता अभियान चलाना होगा ताकि सभी को सुरक्षा कवच मिल सके साथ ही कोरोना प्रोटाकॉल का पालन भी सुनिश्चित करना होगा।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

घात और बात की चीनी रणनीति के खतरे

विवेक काटजू

जब से चीन ने अप्रैल, 2020 में लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा पर कई जगह सीमा उल्लंघन किया है, भारत द्वारा अपनाया गया रुख एकदम सही है कि यह हरकत अस्वीकार्य है। आज की तारीख में, बेशक चीन कब्जाए गए कई इलाकों से वापस पीछे हट चुका है लेकिन सब क्षेत्रों से नहीं। भारत इस बात पर जोर देता आया है कि भारत-चीन बृहद रिश्तों में सामान्य स्थिति तब तक बहाल नहीं हो सकती जब तक कि सीमा पर शांति और स्थिरता कायम न हो इसलिए, यह अवयव सीमा की स्थिति और कुल भारत-चीन बृहद रिश्तों के बीच सीधा संबंध स्थापित करता है।

विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने कई मौकों पर चीनी घुसपैठ पर भारत की स्थिति स्पष्ट की है। देश में राजनीतिक और सामरिक समझ रखने वाला वर्ग भी चीनी घुसपैठों पर सरकारी रुख का समर्थन करता है, इसमें द्विपक्षीय संबंधों में सामान्य स्थिति के लिए सीमा पर शांति बने रहना जरूरी है, वाला पहलू भी शामिल है। और इसके लिए जहां कहीं भी चीन घुस आया है, पहले उन सभी जगहों से हटना आवश्यक है। एस. जयशंकर की मुलाकात गत 7 जुलाई को अपने चीनी समकक्ष वांग ली के साथ इंडोनेशिया के बाली में हुई, जहां दोनों जी-20 संगठन के विदेश मंत्री सम्मेलन में भाग लेने पहुंचे थे। इस महत्वपूर्ण भेंट पर भारत के विदेश मंत्रालय ने उसी दिन विज्ञप्ति जारी की है। इसमें कहा गया, 'एस. जयशंकर ने पूरबी लद्दाख की सीमा नियंत्रण रेखा पर बाकी बचे सभी विवादों को जल्दी हल करने का आह्वान किया है। जयशंकर ने वांग ली से वार्ता में इस बात पर जोर दिया कि उन द्विपक्षीय समझौतों, आचार संहिता और समझ पर अमल करना जरूरी है, जिन पर विगत में सहमति बन चुकी है। भारत-चीन रिश्तों का हवाला देते हुए उन्होंने 'तीन साझे अवयव'आपसी सम्मान, आपसी संवेदनशीलता और आपसी हित पर पालना करने की जरूरत बताई'। अलबत्ता, विदेश मंत्रालय के इस वक्तव्य में यह जिक्र नहीं था कि जयशंकर ने वांग ली से कहा है कि आपसी बृहद रिश्तों का सामान्य होना वास्तविक सीमा रेखा पर शांति और स्थिरता होने से जुड़ा है।

हो सकता है, विदेश मंत्रालय की इस विज्ञप्ति में चीनी घुसपैठ पर भारत की इस महत्वपूर्ण स्थिति के बारे में जिक्र न होना भूलवश हो जबकि शायद जयशंकर ने कहा हो, तब यह गंभीर

विभागीय चूक है, लेकिन यदि जयशंकर ने जान-बूझकर इस बिंदु पर बात नहीं की तो सवाल उठता है कि क्या इस महत्वपूर्ण मुद्दे पर भारत अपना रुख बदल रहा है?

इस तथ्य के मद्देनजर कि नई दिल्ली में 25 मार्च को वांग ली से हुई मुलाकात में एस. जयशंकर ने उपरोक्त दोनों बिंदुओं के बीच संबंधों का जिक्र विशेषतौर पर करते हुए कहा था- 'सीमा पर तनाव का असर आपसी बृहद संबंधों पर पिछले दो सालों में नजर आया है', 'सामान्य स्थिति की बहाली के लिए जरूरी है कि सीमारेखा पर शांति और स्थिरता बनी रहे। अगर दोनों पक्ष रिश्ते सुधारने को प्रतिबद्ध हैं तो यह भावना सीमा पर हुई घुसपैठ से वापसी के लिए जारी वार्ता में भी पूरी तरह दिखनी चाहिए।' उन्होंने तब भी भारत-चीन संबंधों के लिए 'तीन साझे अवयवों' का जिक्र किया था। आगे, जून माह में दिल्ली वार्ता के 12वें संस्करण में अपने संबोधन में एस. जयशंकर ने एक बार फिर से 'तीन साझे अवयवों' पर जोर देने के अलावा भारत-चीन संबंधों के सामान्यीकरण को सीमा पर शांति और स्थिरता बहाली से जोड़ा।

पिछले दो सालों में चीन ने वास्तविक सीमा नियंत्रण रेखा पर अपनी तरफ बुनियादी ढांचे में बहुत बदलाव किया है। यह उसको सेना की तैनाती शीघ्र करने में मददगार होगा। परिणामवश, भारत के पास और कोई विकल्प नहीं बचा कि वह भी वित्तीय स्रोत जुटाकर सीमारेखा पर अपने क्षेत्र के आधारभूत ढांचे का विकास करे। भारत को लेकर चीन का कुल मिलाकर रुख यही रहा है कि सीमारेखा विवादों का महत्व कम आंककर रिश्तों के अन्य पहलुओं पर जोर दिया जाए जबकि भारत कैसे अप्रैल, 2020 की घुसपैठ को नजरअंदाज़ कर सकता है। भविष्य में 1990 के दशक वाले वास्तविक सीमारेखा शांति बहाली समझौतों पर निर्भर नहीं रहा जा सकता। चीन की यह चाल उससे दरपेश सामरिक चुनौतियों को उघाड़कर बताती है। जहां एक ओर तनाव घटाने को कूटनीतिक और फौजी-से-फौजी समझौता वार्ताएं जारी रखना जरूरी है, वहीं यह प्रयास भारत के राजनीतिक और सामरिक वर्ग की इस सोच को ढीला न पड़ने दें कि चीन के दुस्साहसों की प्रभावशाली ढंग से रोकथाम हेतु भारत की सम्मिलित शक्ति बनाने के लिए राष्ट्रीय प्रयासों को अंजाम देने की जरूरत है।

तमिलनाडु की राजनीति में हलचल

आर राजागोपालन

दिवंगत जयललिता की पार्टी एआईएडीएमके (अन्ना द्रमुक) में बिखराव स्पष्ट रूप से सामने है। पूर्व मुख्यमंत्री एडप्पादी पलानीस्वामी ने 'अम्मा' की विरासत पर कब्जा कर लिया है। इस पार्टी के दो करोड़ काडर हैं और इसमें कोई परिवारवाद और वंशवाद नहीं है। ऐसे में सवाल है कि आखिर बिखराव क्यों हुआ। इसका उत्तर सरल है दो जातियों- थेवर और गाउंडर- के बीच जारी लड़ाई. पलानीस्वामी गाउंडर जाति से आते हैं। अन्ना द्रमुक के दूसरे प्रमुख नेता ओ पनीरसेल्वम हैं, जो थेवर जाति से हैं। तमिलों के लिए यह आंतरिक लड़ाई नयी बात नहीं है लेकिन जयललिता के विराट व्यक्तित्व के कारण पलानीस्वामी व पनीरसेल्वम पार्टी के भीतर ही झगड़ते थे जैसे कभी मध्य प्रदेश में कांग्रेस में सिंधिया, कमलनाथ और दिग्विजय सिंह के बीच तनातनी चलती थी।

जयललिता और करुणानिधि जैसे बड़े नेताओं के जाने के बाद से तमिलनाडु की राजनीति बड़े बदलावों से गुजर रही है। यदि किसी को इस राज्य की राजनीति को समझना है तो उसे वहां की प्रभावशाली जातियों के बारे में जानना चाहिए। छह बड़ी जातियों में से थेवर समुदाय को अन्ना द्रमुक का करीबी माना जाता है। अन्ना द्रमुक के कमजोर होने से द्रमुक को अल्पकालिक लाभ मिल सकता है, पर द्रमुक को भी यह चिंता करनी चाहिए कि अन्ना द्रमुक द्वारा खाली की गयी विपक्ष की जगह पर कौन सी राजनीतिक शक्ति काबिज होगी। हाल तक पार्टी को पलानीस्वामी और पनीरसेल्वम संयुक्त रूप से चला रहे थे, जो भारतीय राजनीति में एक अनूठा प्रयोग था, पर अब पलानीस्वामी ने अन्ना द्रमुक का नियंत्रण अपने हाथ में ले लिया है और पनीरसेल्वम को निष्कासित कर दिया है। इन दोनों नेताओं ने वीके शशिकला को बाहर रखने के लिए हाथ मिलाया था, जो उस समय जेल में थीं। साल 2016 में जयललिता की मौत के बाद शशिकला ने पार्टी की कमान अपने हाथ में ले ली थी पर फरवरी, 2017 में उन्हें चार साल की जेल हो गयी पर अगर इतिहास के आधार पर देखा जाए, पार्टी के नेतृत्व की लड़ाई अभी खत्म नहीं हुई है। भले ही पार्टी कमिटियों ने एक फैसला ले लिया है लेकिन पनीरसेल्वम अपनी ताकत का परीक्षण काडरों के बीच कर सकते हैं। पार्टी के भीतर के त्रिकोणीय संघर्ष में पलानीस्वामी ने खेल कर दिया है। इस पार्टी के भीतर होनेवाली हलचलों जैसे उदाहरण भारतीय राजनीति में बहुत ही कम हैं। ये दोनों नेता एक समय शशिकला की पसंद रह चुके हैं। जब जयललिता मरणासन्न थीं तो पनीरसेल्वम उनके चयनित उत्तराधिकारी के रूप में मुख्यमंत्री पद के लिए पहली पसंद थे क्योंकि दो अवसरों पर जयललिता उन्हें कुछ समय के लिए मुख्यमंत्री बना चुकी थीं। शशिकला को बाहर करने के बाद पलानीस्वामी ने सरकार पर अपनी पकड़ मजबूत की और उनके समर्थकों को अपने पाले में लाकर पनीरसेल्वम को हाशिये पर धकेल दिया।

जयललिता की मृत्यु के बाद सुपरस्टार रजनीकांत उस जगह को लेना चाहते थे पर उन्हें द्रमुक ने धमका कर राजनीति में आने से रोक दिया। इस प्रकरण के राजनीतिक कारणों का पता कई स्थानीय नेताओं को है। एमजी रामचंद्रन की मौत के बाद जब अन्ना द्रमुक में टूट हुई थी, तब अधिकतर वरिष्ठ नेता उनकी पत्नी जानकी रामचंद्रन के साथ थे, लेकिन अंतत: जयललिता की जीत हुई परंतु पनीरसेल्वम और पलानीस्वामी के पास जयललिता जैसा करिश्मा नहीं है तथा कॉडर इस बात से बेचैन हो सकते हैं कि कई दशकों के बाद पार्टी के पास कोई बेहद लोकप्रिय नेता नहीं है। ऐसी स्थिति में नया जातिगत या क्षेत्रीय विभाजन उभर सकता है। पनीरसेल्वम और शशिकला (दोनों थेवर हैं) एक साथ आकर अन्ना द्रमुक के सामाजिक आधार में सेंध लगा सकते हैं। पिछले साल हार के बावजूद पार्टी के अच्छे प्रदर्शन का एक कारण अच्छे प्रशासक के रूप में पलानीस्वामी की छवि को माना जा सकता है। जयललिता मजबूती से सत्ता में वापसी करती थीं और पार्टी को ऐसी ही उम्मीद अपने नये मुखिया से होगी।

अन्ना द्रमुक की फूट द्रमुक के लिए खतरा हो सकती है। जिस प्रकार महाराष्ट्र में उद्धव ठाकरे ने गठबंधन पर अपने बेटे आदित्य ठाकरे को थोपा था, उसी तरह द्रमुक नेता एमके स्टालिन अपने बेटे उदयनिधि को आगे बढ़ा सकते हैं जो अभी विधायक और द्रमुक की युवा इकाई के सचिव हैं। अगले साल के शुरू में उन्हें तमिलनाडु का उप मुख्यमंत्री बनाया जायेगा। तब असली राजनीति शुरू होगी। पार्टी में जरूर एकनाथ शिंदे प्रकरण दोहराया जायेगा। अन्ना द्रमुक के विभाजन पर भाजपा का संभावित रुख स्पष्ट है। 2019 और 2021 के चुनाव में अमित शाह का सूत्र था कि सभी गुट एकजुट होकर जयललिता की विरासत को आगे ले चलें या फिर सभी तीन धड़े एनडीए के बैनर तले सहयोगी बनें। भाजपा के स्थानीय नेता के अन्नामलाई पूरे राज्य का दौरा कर रहे हैं। गुटों में बंटी भाजपा में अब अकेले लड़ने का दम है। पार्टी के पास राज्य में सात प्रतिशत वोट हैं। मोदी करिश्मा इसे 10 प्रतिशत पर ले जा सकता है ताकि अन्ना द्रमुक और कांग्रेस के राष्ट्रवादी समूह भाजपा में शामिल हो सकें चाहे जो हो, पलानीस्वामी बड़े नेता के रूप में उभरेंगे और द्रमुक नेता एमके स्टालिन को कड़ी चुनौती देंगे पर पार्टी से बाहर किया गया पनीरसेल्वम खेमा भी चुप नहीं बैठेगा।

रुद्राभिषेक से हर इच्छा पूरी करेंगे शिवजी

महादेव को प्रसन्न करने का रामबाण उपाय है रुद्राभिषेक। ज्योतिष के जानकारों की मानें तो सही समय पर रुद्राभिषेक करके आप शिव से मनचाहा वरदान पा सकते हैं। क्योंकि शिव के रुद्र रूप को बहुत प्रिय है अभिषेक तो आइए जानते हैं रुद्राभिषेक क्यों है इतना प्रभावी और महत्वपूर्ण। भोलेनाथ सबसे सरल उपासना से भी प्रसन्न होते हैं लेकिन रुद्राभिषेक उन्हें सबसे ज्यादा प्रिय है। कहते हैं कि रुद्राभिषेक से शिव जी को प्रसन्न करके आप असंभव को भी संभव करने की शक्ति पा सकते हैं तो आप भी सही समय पर रुद्राभिषेक करिए और शिव कृपा के भागी बनिए। रूद्र भगवान शिव का ही प्रचंड रूप हैं। शिव जी की कृपा से सारे ग्रह बाधाओं और सारी समस्याओं का नाश होता है। शिवलिंग पर मंत्रों के साथ विशेष चीजें अर्पित करना ही रुद्राभिषेक कहा जाता है। रुद्राभिषेक में शुक्ल यजुर्वेद के रुद्राष्टाध्यायी के मंत्रों का पाठ करते हैं। सावन में रुद्राभिषेक करना ज्यादा शुभ होता है। रुद्राभिषेक करने से मनोकामनाएं जल्दी पूरी होती हैं। रुद्राभिषेक कोई भी कष्ट या ग्रहों की पीड़ा दूर करने का सबसे उत्तम उपाय है।

कौन से शिवलिंग पर करें रुद्राभिषेक

अलग-अलग शिवलिंग और स्थानों पर रुद्राभिषेक करने का फल भी अलग होता है। आइए हम आपको बताते हैं कि कौन से शिवलिंग पर रुद्राभिषेक करना ज्यादा फलदायी होता है। मंदिर के शिवलिंग पर रुद्राभिषेक करना बहुत उत्तम होता है। इसके अलावा घर में स्थापित शिवलिंग पर भी अभिषेक कर सकते हैं। रुद्राभिषेक घर से ज्यादा मंदिर में, नदी तट पर और सबसे ज्यादा पर्वतों पर फलदायी होता है। शिवलिंग न हो तो अंगूठे को भी शिवलिंग मानकर उसका अभिषेक कर सकते हैं।

अलग-अलग वस्तुओं से अभिषेक करने का फल

रुद्राभिषेक में मनोकामना के अनुसार अलग-अलग वस्तुओं का प्रयोग किया जाता है। ज्योतिष मनाते हैं कि जिस वस्तु से रुद्राभिषेक करते हैं उससे जुड़ी मनोकामना ही पूरी होती है तो आइए जानते हैं कि कौन सी वस्तु से रुद्राभिषेक करने से पूरी होगी आपकी मनोकामना। घी की धारा से अभिषेक करने से वंश बढ़ता है। इक्षुरस से अभिषेक करने से दुर्योग नष्ट होते हैं और मनोकामनाएं पूरी होती हैं। शक्कर मिले दूध से अभिषेक करने से इंसान विद्वान हो जाता है। शहद से अभिषेक करने से पुरानी बीमारियां नष्ट हो जाती हैं। गाय के दूध से अभिषेक करने से आरोग्य मिलता है। शक्कर मिले जल से अभिषेक करने से संतान प्राप्ति सरल हो जाती हैं। भस्म से अभिषेक करने से इंसान को मुक्ति और मोक्ष की प्राप्ति होती है। कुछ विशेष परिस्थितियों में तेल से भी शिव जी का अभिषेक होता है।

रुद्राभिषेक कब होता है उत्तम

कोई भी धार्मिक काम करने में समय और मुहूर्त का विशेष महत्व होता है। रुद्राभिषेक के लिए भी कुछ उत्तम योग बनते हैं। आइए जानते हैं कि कौन सा समय रुद्राभिषेक करने के लिए सबसे उत्तम होता है। रुद्राभिषेक के लिए शिव जी की उपस्थिति देखना बहुत जरूरी है। शिव जी का निवास देखे बिना कभी भी रुद्राभिषेक न करें, बुरा प्रभाव होता है। शिव जी का निवास तभी देखें जब मनोकामना पूर्ति के लिए अभिषेक करना हो।

तिथियों का विचार नहीं किया जाता?

कुछ व्रत और त्योहार रुद्राभिषेक के लिए हमेशा शुभ ही होते हैं। उन दिनों में तिथियों का ध्यान रखने की जरूरत नहीं होती है। शिवरात्री, प्रदोष और सावन के सोमवार को शिव के निवास पर विचार नहीं करते। सिद्ध पीठ या ज्योतिर्लिंग के क्षेत्र में भी शिव के निवास पर विचार नहीं करते। रुद्राभिषेक के लिए ये स्थान और समय दोनों हमेशा मंगलकारी होते हैं। शिव कृपा से आपकी सभी मनोकामना जरूर पूरी होंगी तो आपके मन में जैसी कामना हो वैसा ही रुद्राभिषेक करिए और अपने जीवन को शुभ और मंगलमय बनाइए।

शिवजी का निवास कब अनिष्टकारी होता है?

शिव आराधना का सबसे उत्तम तरीका है रुद्राभिषेक लेकिन रुद्राभिषेक करने से पहले शिव के अनिष्टकारी निवास का ध्यानरखना बहुत जरूरी है। कृष्णपक्ष की सप्तमी और चतुर्दशी को भगवान शिव श्मशान में समाधि में रहते हैं। शुक्लपक्ष की प्रतिपदा, अष्टमी और पूर्णिमा को भी शिव श्मशान में समाधि में रहते हैं। कृष्ण पक्ष की द्वितीया और नवमी को महादेव देवताओं की समस्याएं सुनते हैं। शुक्लपक्ष की तृतीया और दशमी में भी महादेव देवताओं की समस्याएं सुनते हैं। कृष्णपक्ष की तृतीया और दशमी को नटराज क्रीड़ा में व्यस्त रहते हैं। शुक्लपक्ष की चतुर्थी और एकादशी को भी नटराज क्रीड़ा में व्यस्त रहते हैं। कृष्णपक्ष की षष्ठी और त्रयोदशी को रुद्र भोजन करते हैं। शुक्लपक्ष की सप्तमी और चतुर्दशी को भी रुद्र भोजन करते हैं। इन तिथियों में मनोकामना पूर्ति के लिए अभिषेक नहीं किया जा सकता है।

शिवजी का निवास कब मंगलकारी होता है?

देवों के देव महादेव ब्रह्माण्ड में घूमते रहते हैं। महादेव कभी मां गौरी के साथ होते हैं तो कभी-कभी कैलाश पर विराजते हैं। ज्योतिषाचार्याओं की मानें तो रुद्राभिषेक तभी करना चाहिए जब शिव जी का निवास मंगलकारी हो हर महीने के शुक्ल पक्ष की द्वितीया और नवमी को शिव जी मां गौरी के साथ रहते हैं। हर महीने कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा, अष्टमी और अमावस्या को भी शिव जी मां गौरी के साथ रहते हैं। कृष्ण पक्ष की चतुर्थी और एकादशी को महादेव कैलाश पर वास करते हैं। शुक्ल पक्ष की पंचमी और द्वादशी तिथि को भी महादेव कैलाश पर ही रहते हैं। कृष्ण पक्ष की पंचमी और द्वादशी को शिव जी नंदी पर सवार होकर पूरा विश्व भ्रमण करते हैं। शुक्ल पक्ष की षष्ठी और त्रयोदशी तिथि को भी शिव जी विश्व भ्रमण पर होते हैं। रुद्राभिषेक के लिए इन तिथियों में महादेव का निवास मंगलकारी होता है।

हंसना मना है

टीचर: किसी ऐसे द्रव्य का नाम बताओ, जिसे जमा नहीं सकते...? छात्र: गरम पानी...!
टीचर: कौन से महीने में 28 दिन होते हैं...? छात्र: सर, वो तो हर महीने में होते हैं...! टीचर (गुस्से में): जा, बाहर जाकर लाइन में सबसे आखिर में खड़े हो जा
थोड़ी देर बाद टीचर (गुस्से में): तुझे मैंने कहा था न कि सबसे आखिर में खड़ा हो जा छात्र: सर, उस जगह पर पहले से ही कोई खड़ा है...! टीचर: संस्कृत भाषा में पत्नी को क्या कहते हैं...? चिंटू: गुरूजी... संस्कृत तो छोड़िये, किसी भी भाषा में पत्नी को कुछ नहीं कह सकते...!

मास्टर जी: गजल और भाषण में क्या अंतर होता है...? छात्र: पराई स्त्री का हर शब्द गजल होता है और बीवी का हर शब्द भाषण...

पत्नी: अजी सुनते हो, तुम्हारा दोस्त एक पागल लड़की से शादी रचाने जा रहा है, उसे रोकोगे नहीं? पति: क्यों रोकूं भला? उसने मुझे रोका था क्या? पति (मरते समय): तेरे लौकर से सोने की चेन मैंने ही चोरी की थी। बीवी (आंसू बहाते हुए): कोई बात नहीं। पति: तेरे पिता ने जो तुझे 50 हजार रुपए दिए थे, वह भी मैंने ही चुराये थे। पत्नी: वो भी माफ किया। पति: तेरी शादी की कीमती साड़ी भी मैंने ही चोरी कर अपनी प्रेमिका को दिया था। पत्नी :तुम्हे जहर भी तो मैंने ही दिया था ना, चलो हो गई बात बराबर।

कहानी | मौत की सजा

बीजापुर के सुल्तान इस्माइल आदिलशाह को डर था कि राजा कृष्णदेव राय अपने प्रदेश रायचूर और मदकल को वापस लेने के लिए हम पर हमला करेंगे। उसने सुन रखा था कि वैसे राजा ने अपनी वीरता से कोडीवडु, कोंडपल्ली, उदयगिरि, श्रीरंगपत्तिनम, उमत्तूर और शिवसमुद्रम को जीत लिया था। सुलतान ने सोचा कि इन दो नगरों को बचाने का एक ही उपाय है कि राजा कृष्णदेव राय की हत्या करवा दी जाए। उसने बड़े इनाम का लालच देकर तेनालीराम के पुराने सहपाठी और उसके मामा के संबंधी कनकराजू को इस काम के लिए राजी कर लिया। कनकराजू तेनालीराम के घर पहुंचा। तेनालीराम ने अपने मित्र का खुले दिल से स्वागत किया। उसकी खूब आवभगत की और अपने घर में उसे ठहराया। एक दिन जब तेनालीराम काम से कहीं बाहर गया हुआ था, कनकराजू ने राजा को तेनालीराम की तरफ से संदेश भेजा-'आप इसी समय मेरे घर आएं तो आपको ऐसी अनोखी बात दिखाऊं, जो आपने जीवनभर न देखी हो। राजा बिना किसी हथियार के तेनालीराम के घर पहुंचे। अचानक कनकराजू ने छुरे से उन पर वार कर दिया। इससे पहले कि छुरे का वार राजा को लगता, उन्होंने कसकर उसकी कलाई पकड़ ली। उसी समय राजा के अंगरक्षकों के सरदार ने कनकराजू को पकड़ लिया और वहीं उसे ढेर कर दिया। कानून के अनुसार, राजा को मारने की कोशिश करने वाले को जो व्यक्ति आश्रय देता था, उसे मृत्युदंड दिया जाता था। तेनालीराम को भी मृत्युदंड सुनाया गया। उसने राजा से दया की प्रार्थना की। राजा ने कहा, 'मैं राज्य के नियम के विरुद्ध जाकर तुम्हें क्षमा नहीं कर सकता। तुमने उस दुष्ट को अपने यहां आश्रय दिया। तुम कैसे मुझसे क्षमा की आशा कर सकते हो? हां, यह हो सकता है कि तुम स्वयं फैसला कर लो, तुम्हें किस प्रकार की मृत्यु चाहिए?' 'मुझे बुढ़ापे की मृत्यु चाहिए, महाराज।' तेनालीराम ने कहा। सभी आश्चर्यचकित थे। राजा हंसकर बोले, 'इस बार भी बच निकले तेनालीराम।'

3 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष
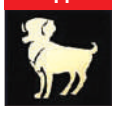
सेहत संबंधी मामलों को छोड़कर, आज का दिन आपके लिए भाग्यशाली है। आपकी मां और आपके बच्चों का स्वास्थ्य भी आपको कुछ परेशान कर सकता है।

वृषभ

दिन खुशी से भरा रहेगा। आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। ऑफिस में कुछ दोस्तों के सहयोग से आपका प्रोजेक्ट पूरा होगा। जो विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करना चाहते हैं, उनके लिए दिन फेवरेबल है।

मिथुन
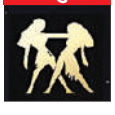
आज दैनिक कार्यों में दिन बीतेगा। परिजनों का स्वास्थ्य बिगड सकता है। आवश्यक वस्तु गुम हो सकती है। दुष्टजन हानि पहुंचा सकते हैं। महत्वपूर्ण निर्णय सोच-समझकर करें।

कर्क

आज रोजमर्रा के कामों में मन नहीं लगेगा। मन में आती कुछ बातें आपको दुखी कर सकती हैं। भावनाओं और गुस्से पर कंट्रोल करें। जल्दबाजी में कोई काम बिगाड़ भी सकते हैं।

सिंह

महत्वाकांक्षी योजना में प्रवेश कर सकते हैं। सामाजिक कार्यों में शामिल लोगों को प्रतिष्ठा में वृद्धि देखने को मिलेगी और वह अतिरिक्त जिम्मेदारी का वहन भी कर सकते हैं।

कन्या

रोमांच भरा रहेगा। लव रिलेशन को लेकर मन डांवाडोल रहेगा। बहुत सारे ऐसे मत होंगे, जिन पर बात या बहस करने से संबंध बिगड़ सकते हैं। अपने दिल की भड़ास आज निकाल दें।

तुला

आज आप काल्पनिक दुनिया में ही दिन व्यतीत करेंगे। सृजनात्मक शक्ति को भी उचित दिशा मिल जाएगी। खुला व्यवहार लोगों को अखरेगा। खर्च की चिंता से मन अशांत रह सकता हैं।

वृश्चिक

मेहनत ज्यादा करनी पड़ेगी। कामकाज का टेंशन भी बढ़ सकता है। पुराने मुद्दे न उठाएं। प्रेम जताने में संकोच न करें। नौकरी और बिजनेस के मामले में तनाव और फालतू खर्चे के योग हैं।

धनु
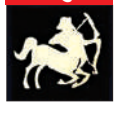
आशावादी न बनें और अत्यधिक सतर्क रहने का प्रयास करें। तीव्र प्रगति के बावजूद आपको धीरे-धीरे आगे बढ़ने और व्यवस्थित रूप से काम करने की आवश्यकता है।

मकर

परिवार में सुख-शाति का माहौल बना रहेगा। सहपाठियों के साथ कहीं बाहर घूमने का प्लान बना सकते हैं। करियर में तरक्की के मामले में कुछ रूकावटें आ सकती है।

कुम्भ
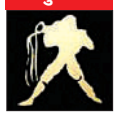
मित्रों के साथ खान-पान का आयोजन होगा। सेहत अच्छी रहेगी। धैर्यशीलता में कमी रहेगी. बातचीत में संयत रहें। परिवार के साथ किसी धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है।

मीन

बिजनेस में फायदा कुछ कम होगा। ट्रांसफर की स्थिति बन सकती है या ऐसी कोई खबर भी आपको मिल सकती है। नौकरी और कारोबार में पैसों का मामला उलझ सकता है।

बॉलीवुड | मन की बात

हिंदी डेब्यू से पहले तापसी ने साउथ की 11 फिल्में की

तापसी पन्नू बॉलीवुड में आने से पहले एक सक्सेसफुल साउथ एक्ट्रेस थीं। तापसी ने अपकमिंग फिल्म शाबाश मिट्ठू के प्रमोशन के दौरान एक इंटरव्यू में ऋषि कपूर के साथ काम करने को लेकर बात की है। एक्ट्रेस ने बताया कि जब ऋषि को उनके साउथ के करियर के बारे में पता चला तो वो काफी इम्प्रेस हुए थे और तापसी को वेटरन एक्ट्रेस बताया था। तापसी ने 11 साउथ फिल्मों में काम करने के बाद 2013 में चश्मे बद्दूर से अपना बॉलीवुड डेब्यू किया था। एक्ट्रेस ने कहा जब मैं 9 साल पहले बॉलीवुड में आई तो मुझे कहा गया कि तुम्हें यह सच छिपाना होगा कि तुम साउथ से हो, क्योंकि लोग तुम्हें साउथ इंडियन एक्ट्रेस के तौर पर देखने लगेंगे। मैंने कहा कि यार मैंने इतनी मेहनत की हैं वहां पर, लोग इसे असेट की तरह क्यों नहीं देखते? मैंने साउथ में कुछ नामी लोगों के साथ बहुत अच्छा काम किया है। तापसी ने आगे कहा कि मुझे याद है के सेट पर ऋषि सर ने मुझसे पूछा था साउथ में तुमने कितनी फिल्में की हैं। मैंने कहा 10 और मैं 11वीं पर काम कर रही हूं। और जब चश्मे बद्दूर रिलीज हुई उस वक्त तक मेरी साउथ की 12 फिल्में आ चुकी थीं। उन्होंने कहा अरे तू तो वेटरन है। वो सुनकर शॉक्ड थे कि मैं इतना काम कर चुकी हूं। तापसी ने चश्मे बद्दूर के अलावा ऋषि कपूर के साथ मुल्क में भी काम कर चुकी हैं। फिल्म को ऑडियंस और क्रिटिक्स दोनों से ही अच्छा रिस्पॉन्स मिला था। एक्ट्रेस के अपकमिंग प्रोजेक्ट्स की बात करें तो वो दोबारा, वो लड़की है कहां? और डंकी जैसी फिल्मों में नजर आएंगी। तापसी क्रिकेट टीम की पूर्व कप्तान मिताली राज की बायोपिक शाबाश मिठू में क्रिकेटर के रोल में दिखेंगी।

सुष्मिता की निजी जिंदगी भी कम फिल्मी नहीं

ललित मोदी और पूर्व मिस यूनिवर्स सुष्मिता सेन जल्द शादी करेंगे। सुष्मिता की निजी जिंदगी कम फिल्मी नहीं रही है। 18 की उम्र में मिस इंडिया और 19 की उम्र में मिस यूनिवर्स बनीं सुष्मिता अपने अफेयर्स को लेकर पहली फिल्म से ही चर्चाओं में रही हैं। निर्देशक विक्रम भट्ट ही सुष्मिता की पहली फिल्म दस्तक के राइटर थे। दोनों का नाम खूब जुड़ा और सालों तक सुर्खियों में रहा। 1996 में शुरू रिश्तों का ये सिलसिला 2021 में रोहमन शॉल के साथ ब्रेकअप होने तक चला। सुष्मिता शादी के सवाल को हमेशा टालती रहीं, लेकिन दो बेटियों को गोद लेकर उनकी जिम्मेदारी उठाने पर उन्हें खूब तारीफें भी मिलीं। सुष्मिता का जन्म 19 नवंबर 1975 को बंगाली बैद्य फैमिली में हुआ। हैदराबाद में जन्मीं सुष्मिता के पिता सुबीर सेन इंडियन एयरफोर्स में विंग कमांडर थे और मां शुभ्रा सेन ज्वैलरी डिजाइनर थीं। शुरुआती पढ़ाई हैदराबाद में ही हुई। फिर नई दिल्ली के एयरफोर्स गोल्ड जुबली इंस्टिट्यूट से ग्रेजुएशन किया। इस दौरान ही सुष्मिता मॉडलिंग से जुड़ीं। 1994 में जब सुष्मिता ने मिस यूनिवर्स का खिताब जीता तो उनके सामने फिल्म ऑफर्स की लाइन लग गई। बड़े-बड़े डायरेक्टर-प्रोड्यूसर सुष को अपनी फिल्म से डेब्यू कराना चाहते थे। तब सुष्मिता ने उस समय के सबसे सफल डायरेक्टर्स में से एक महेश भट्ट की फिल्म साइन की। फिल्म का नाम था दस्तक। यह एक ब्यूटी क्वीन के सिरफिरे आशिक की कहानी ही थी। यहीं से सुष्मिता का फिल्मी सफरनामा शुरू हुआ। सुष्मिता के अफेयर्स की लिस्ट काफी लंबी है। रणदीप हुड्डा भी कभी सुष्मिता के साथ अपने अफेयर के चलते सुर्खियों में रहे थे। 2013 के दौरान पूर्व पाकिस्तानी क्रिकेटर वसीम अकरम के साथ अफेयर की खबरें भी थीं। कहा तो ये भी गया था कि दोनों शादी करने वाले हैं, लेकिन सुष्मिता ने इन खबरों का खंडन किया था।

ऐश्वर्या को पछाड़कर बनी थीं मिस इंडिया

1994 में मॉडलिंग के साथ सुष्मिता ने ब्यूटी कांटेस्ट में भाग लिया। इस कांटेस्ट में ऐश्वर्या राय भी थीं, लेकिन मिस इंडिया का खिताब जीता सुष्मिता ने। ऐश्वर्या तब कुछ पाइंट्स से हार गई थीं, लेकिन इसी साल उन्होंने मिस वर्ल्ड का खिताब जीता, जब सुष्मिता मिस यूनिवर्स बनी थीं। कुछ रिपोर्ट्स में कहा गया कि सुष्मिता मिस इंडिया के उस कॉम्पिटिशन में उतरना ही नहीं चाहती थीं, क्योंकि वहां ऐश्वर्या मजबूत दावेदार मानी जा रही थीं और सुष्मिता को अंडरडॉग कहा जा रहा था। फिर भी कुछ लोगों ने जोर दिया और सुष्मिता ने ऐश्वर्या को पछाड़ते हुए मिस इंडिया के क्राउन पर कब्जा जमा लिया।

रिया चक्रवर्ती हुईं ट्रोलिंग का शिकार

सुशांत सिंह राजपूत की मौत के बाद रिया चक्रवर्ती लगातार सोशल मीडिया पर यूजर्स के निशाने पर रही हैं। उनका नया पोस्ट हो या वह कहीं स्पॉट हुई हों, यूजर्स उन्हें ट्रोल करने लग जाते हैं। अब हाल ही में एक्ट्रेस को जिम के बाहर स्पॉट किया गया। रिया ने जिम से निकलकर पैपराजी के सामने पोज दिए, जिसके बाद उन्हें यूजर्स ने ट्रोल करना शुरू कर दिया। वीडियो पर एक यूजर ने कमेंट किया बायकॉट रिया चक्रवर्ती। बता दें कि हाल ही में एनसीबी ने दावा किया हैं कि रिया चक्रवर्ती ने कई बार गांजा खरीदकर सुशांत सिंह राजपूत को दिया था। वहीं सुशांत सिंह राजपूत की मौत से जुड़े ड्रग्स केस में नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो यानी एनसीबी ने चार्जशीट तैयार कर ली है। इसमें रिया और उनके भाई शोविक के अलावा 33 लोगों को आरोपी बनाया गया है। रिया पर उनके बॉयफ्रेंड रहे सुशांत के लिए ड्रग्स खरीदने के आरोप हैं। उन्हें नशे की लत के लिए उकसाने का भी आरोप है। आरोप साबित हुए तो रिया को 10 साल की जेल हो सकती है। एनसीबी की इस चार्जशीट के बाद सुशांत की मौत फिर से नए सवालों के घेरे में आ गई है। सुशांत की मौत की दूसरी एनिवर्सरी पर भास्कर ने डिटेल रिपोर्ट पब्लिश की थी। हमने इस केस से जुड़े तमाम लोगों से बात की थी और केस का मौजूदा स्टेटस जाना था। उस रिपोर्ट को आज दोबारा पब्लिश कर रहे हैं। वहीं एम्स के जिन सुधीर गुप्ता ने सुशांत की मौत को सुसाइड बताया है।

अजब-गजब | मरे हुए कैदियों का शव खाकर करते हैं पार्टी

दुनिया की वो जेल जहां रहते हैं नरपिशाच

दुनिया के हर देश की सरकार कोशिश करती है कि उसके यहां क्राइम की दर सबसे कम हो, इसके लिए कई कड़े नियम बनाए जाते हैं। इन नियमों को तोड़ने वाले को सजा दी जाती है। ये सजा फाइन से लेकर मौत तक की हो सकती है लेकिन ज्यादातर मामलों में कैदियों को जेल में बंद कर इन्हें सुधरने का मौका दिया जाता है। लेकिन आज हम आपको जिस जेल के बारे में बताने जा रहे हैं, वहां रहने वाले कैदी शायद ही कभी सुधरेंगे। इसकी जगह जेल में रहते हुए ये और भी ज्यादा खौफनाक बन जाते हैं। हम बात का रहे हैं रवांडा के गीतारामा जेल की।

गीतारामा जेल को धरती की उन जगहों में से एक माना जाता है, जो नर्क के बराबर है। इस ब्रूटल जेल को रवांडा के कैपिटल किगली में बनाया गया था। इसका निर्माण 1960 में हुआ था। सबसे पहले इसे ब्रिटिश मजदूरों के रहने के लिए बनाया गया था। लेकिन बाद में इसे जेल में बदल दिया गया। इस जेल की क्षमता चार सौ कैदियों की है। लेकिन इस वक्त ओस जेल में सात हजार से ज्यादा कैदी बंद हैं। ये आंकड़ा तो कुछ नहीं है। जब 1990 में रवांडा जेनोसाइड हुआ था, तब यहां करीब पचास हजार कैदी ठूस दिए गए थे। इस जेल में हमेशा से कैदियों को जानवरों की तरह ठूस दिया जाता है। यहाँउनके बैठने तक की जगह नहीं होती। कई कैदी तो टॉयलेट्स में भरे रहते हैं। जेल के कमांडर ने भी माना कि इस जेल में कई कैदी बेगुनाह हैं। इसके बाद भी उन्हें यूं नर्क भोगना पड़ता है। लेकिन कुछ कैदी खूंखार हैं। उन्हें जानवरों का ट्रीटमेंट मिले ये बहुत जरुरी है। लेकिन ये कैदी जेल की सजा पाकर सुधरते नहीं है। उसकी जगह ये और भी ज्यादा खूंखार बन जाते हैं। द रेड क्रॉस की रिपोर्ट के मुताबिक इस जेल में रहने वाले कैदियों में हर दिन 6 की मौत हो जाती है। इन कैदियों को हर दिन खाने के लिए कम भोजन दिया जाता है। इस वजह से ये आपस में ही लड़ाई कर बैठते हैं। कई कैदी खुद से कमजोर का खाना छीनकर खा जाते हैं। जब इसकी शिकायत करो तो उन्हें बेरहमी से मारा जाता है। कई कैदियों ने तो ये भी मना है कि जब इस जेल में किसी कैदी की मौत हो जाती है तो दूसरे उसकी लाश को खा जाते हैं। एक खबर के मुताबिक जेल के कैदियों को नाममात्र खाना दिया जाता है। इस कारण कई बार तो जिन्दा कैदी की ही स्किन दांत से काटकर कुछ कैदी खा जाते हैं।

यहां बारातियों का किया जाता है कीचड़ डालकर स्वागत, निभाई जाती है ये अनोखी परंपरा

दुनियाभर में शादी के दौरान अलग-अलग तरह की रस्म निभाई जाती है। ये रीति-रिवाज सदियों पुराने हैं और लोग आज भी इन्हें अपना रहे हैं। आज हम आपको एक स्थान पर शादी के दौरान निभाई जाने वाली एक ऐसी प्रथा के बारे में बताने जा रहे हैं जो किसी अन्य स्थान पर नहीं निभाई जाती। दरअसल, मैनपाट के आदिवासी समाज में शादी के दौरान बारातियों का स्वागत फूल माला डालकर नहीं किया जाता बल्कि उनके स्वागत के लिए कीचड़ का इस्तेमाल होता है। बता दें कि मैनपाट छत्तीसगढ़ का आदिवासी बहुल इलाका है। यहां की मांझी समाज संस्कृति व परम्परा को बचाने के लिए आज भी पुरखों के जमाने से चली आ रही अनोखी परंपरा को निभा रही है। इस समाज में बारातियों का स्वागत कीचड़ में सराबोर कर किया जाता है। मान्यता है कि लड़की पक्ष के लोग बारातियों के सामने इस खेल के माध्यम से अपने शौर्य का प्रदर्शन करते हैं, जो देखने में काफी आकर्षक होता है। बता दें कि मांझी समाज में 12 गोत्र हैं, जिनके अनूठे आयोजन हमेशा कौतूहल का विषय बने रहते हैं. सभी गोत्र की अपनी अलग-अलग परम्परा है। इसके बावजूद सभी एकजुटता के साथ किसी भी आयोजन में शामिल होते हैं। मांझी समाज का भैंस गोत्र व तोता गोत्र में विवाह की अपनी अनोखी परंपरा है। भैंस गौत्र में लड़की पक्ष के लोग बारात आने से पहले मिट्टी खेलने की तैयारी करके रखते हैं और बारात पहुंचने के बाद कीचड़ में एक-दूसरे को सराबोर करते हैं। इस दौरान मांझी समाज के साथ ही आसपास रहने वाले सभी लोग बारातियों के सामने मिट्टी खेलकर अपने शौर्य का प्रदर्शन करते हैं। जब कभी किसी मांझी के घर बारात पहुंचता है तो कीचड़ में खेलने के लिए हुजूम उमड़ पड़ता है। बारात पहुंचने के सप्ताह भर पहले से खेत को पानी व मिट्टी डालकर तैयार किया जाता है। जब यह पूरी तरह से कीचड़युक्त हो जाता है तो बारात के पहुंचने पर वहां पर जमकर मिट्टी खेली जाती है। भैंस गोत्र के लोग एक-दूसरे को कीचड़ में पाटकर पहले उनके ऊपर मिट्टी का लेप लगाते हैं, इसके बाद आदिवासी संगीत के बीच जमकर लोट-लोट कर मिट्टी खेलते हैं। वहीं विवाह समारोह के दौरान जब लड़की के घर दुल्हा बारात लेकर पहुंचता है तो एक बड़े से पोल में धान की बाली बांधी जाती है और दुल्हे को मुंह से तोड़ने के लिए कहा जाता है, इस दौरान दुल्हा ऐसा नहीं कर पाता है तो लड़की पक्ष के लोग जुर्माना लगाते हैं, जिसे चुकाना अनिवार्य होता है।

प्रदेश सूखे की चपेट में, टोटके कर रही सरकार : अखिलेश

» सपा प्रमुख ने अमृत महोत्सव को लेकर कसा तंज

» बारिश नहीं होने से धान की फसल प्रभावित

» गांवों में दस घंटे भी नहीं मिल रही बिजली

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने कहा है कि भाजपा सरकार का जनता के साथ रूखा व्यवहार करने के चलते ही राज्य सूखे की चपेट में आ गया है। किसानों के माथे पर चिंता की लकीरें हैं। बारिश न होने से खरीफ की बोआई रुकी हुई है। सरकार अमृत महोत्सव जैसे टोटके कर रही है जिसका कोई असर नहीं पड़ रहा है।

उन्होंने कहा कि पूरे प्रदेश में स्थिति काफी चिंताजनक है। समय से बरसात नहीं होने से धान की फसल बुरी तरह प्रभावित हुई है। बहुत जगह तो खरीफ की बोआई ही रुक गई है। इस साल खरीफ की बोआई छह लाख हेक्टेयर कम होने जा रही है। राज्य सरकार ने 60 लाख हेक्टेयर धान रोपाई का लक्ष्य रखा जबकि 27 लाख हेक्टेयर धान की ही रोपाई अब तक हुई है। प्रदेश में बिजली भी उपलब्ध नहीं है। गांवों में तो 10 घंटे भी बिजली की उपलब्धता नहीं है। सिंचाई के लिए न बिजली है न पानी। पशुओं को न पीने का पानी और न ही चारा-भूसा मिल पा रहा है। भाजपा सरकार अलर्ट जारी कर अपने कर्तव्य की इतिश्री कर लेती है। उन्होंने कहा कि सरकार ने मौसम की पूरी जानकारी किए बगैर 30 करोड़ पौधे लगाने का लक्ष्य घोषित कर दिया। गांव-गांव तालाबों की खुदाई के तथाकथित निर्देश हैं। अमृत महोत्सव के नाम पर हो रहे इन टोटकों का कोई असर नहीं दिख रहा है। जब बरसात नहीं तो सूखा पड़ना स्वाभाविक है। अब न पौधे बच रहे हैं न तालाबों में पानी भरा है। बुंदेलखंड की तो इस राज में बहुत उपेक्षा हुई है। सपा सरकार में बुंदेलखंड के चरखारी में सात सरोवरों का सौंदर्यीकरण हुआ था। भाजपा सरकार का इस ओर ध्यान नहीं। वह बस नफरत की राजनीति के सहारे सत्ता से चिपके रहना ही जानती है। जनता निश्चित ही एक दिन उनकी जवाबदेही तय करेगी।

पूर्व मंत्री याकूब कुरैशी और बेटों पर इनाम धर-पकड़ को बनी टीम

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

» घर और मीट प्लांट को किया जा चुका है कुर्क

मेरठ। भगोड़े पूर्व मंत्री याकूब कुरैशी और उनके दोनों बेटे इमरान और फिरोज पर पुलिस ने 25-25 हजार रुपये का इनाम घोषित कर दिया है। तीनों की धरपकड़ को पुलिस की टीम गठित की गई है। साथ ही कुर्की को चुनौती देने वाली याकूब की पत्नी शमजिदा की अर्जी पर पुलिस ने जवाब पेश कर दिया है। केस डायरी कोर्ट में सीनियर अभियोजन अधिकारी से विचार विमर्श को भेज दी है।

पिछले दिनों याकूब कुरैशी के कोतवाली थाना क्षेत्र के सराय बहलीम स्थित घर और खरखौदा स्थित मीट प्लांट को पुलिस ने कुर्क किया था। कोठी के अंदर से करीब 25 करोड़ और फैक्ट्री की सौ करोड़ की संपत्ति कुर्क की गई है। कुर्की के बाद भी याकूब कुरैशी और दोनों बेटे फिरोज और इमरान ने कोर्ट में सरेंडर नहीं किया है। एसएसपी रोहित सिंह सजवाण ने बताया कि याकूब और दोनों बेटों पर 25-25 हजार का इनाम घोषित किया गया है। उसके बाद भी याकूब परिवार ने सरेंडर नहीं किया तो इनाम की रकम बढ़ा दी जाएगी। गैंगस्टर एक्ट में मुकदमा दर्ज कर संपत्ति जब्तीकरण प्रक्रिया की जाएगी।

आजम के खिलाफ मुकदमों पर नहीं हुई सुनवाई

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

» कोर्ट नहीं पहुंचे गवाह, एक केस 15 साल पुराना

रामपुर। सपा विधायक आजम खां के खिलाफ मुकदमों में गवाहों के न आने के कारण सुनवाई नहीं हो सकी। इनमें एक मुकदमा 15 साल पुराना है। वर्ष 2007 के विधान सभा चुनाव के दौरान आजम खां ने टांडा में जनसभा की थी। उन पर जनसभा में जातिसूचक टिप्पणी करने का आरोप है। तब बसपा नेता धीरज शील की ओर से आजम खां पर एससी-एसटी एक्ट का मुकदमा दर्ज कराया गया था।

मुकदमे की सुनवाई एमपी-एमएलए कोर्ट में चल रही है। 31 अक्टूबर 2021 को कोर्ट ने आजम खां पर आरोप तय कर दिए थे। मुकदमा गवाही पर आ गया है। शुक्रवार को इस मामले में कोर्ट में सुनवाई थी लेकिन कोई गवाह नहीं आया। गवाहों के न आने पर कोर्ट ने नाराजगी जताई और गवाहों को पेश करने के लिए पुलिस अधीक्षक को पत्र लिखा है। सहायक जिला शासकीय अधिवक्ता कमल कुमार गुप्ता ने बताया कि अब इस मामले में 21 जुलाई को सुनवाई होगी। उधर, यतीमखाना प्रकरण के एक मामले में भी सुनवाई होनी थी, लेकिन गवाह नहीं आया। अब अदालत इस मामले में 19 जुलाई को सुनवाई करेगी।

अब संसद में पर्चे और तख्तियों पर रोक, येचुरी बोले, यह अलोकतांत्रिक

» लोक सभा सचिवालय ने मानसून सत्र से पहले जारी की एडवाइजरी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। असंसदीय शब्दों की नई सूची और संसद परिसर में धरने प्रदर्शन पर रोक के बाद अब संसद में पर्चे, पोस्टर व तख्तियों पर पाबंदी का फरमान जारी हुआ है। इसे लेकर विपक्ष भड़क गया है।

लोक सभा सचिवालय ने शुक्रवार को मानसून सत्र के दौरान सदन में किसी भी तरह के पर्चे और तख्तियों के वितरण पर रोक लगाते हुए एडवाइजरी जारी की है। शुक्रवार को संसद परिसर में धरने और प्रदर्शन पर भी रोक लगा दी थी जबकि सदस्य बापू की प्रतिमा के समक्ष अक्सर जमा होकर प्रदर्शन करते नजर आते थे। इससे पहले गुरुवार को दोनों सदनों में असंसदीय माने जाने वाले शब्दों की नई सूची जारी की गई थी। इन्हें लेकर विपक्षी नेता पहले से खफा हैं। अब बैनर, तख्तियों व पर्चों पर रोक ने उनकी नाराजगी और बढ़ा दी है। इस पर माकपा नेता सीताराम येचुरी ने तीखी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने ट्वीट किया, लोकतंत्र का मखौल उड़ाया जा रहा है, इस तरह के तानाशाही आदेश निकाल कर। संसद भवन परिसर में धरना देना सांसदों का एक राजनीतिक अधिकार है, जिसका हनन हो रहा है। क्या तमाशा है। यह अलोकतांत्रिक है। भारत की आत्मा, उसके लोकतंत्र और उसकी आवाज का गला घोंटने की कोशिश विफल हो जाएगी। संसद परिसर में धरना-प्रदर्शन पर बैन की सूचना कल सबसे पहले कांग्रेस सांसद जयराम रमेश ने दी थी। उन्होंने इसकी आलोचना करते हुए तंज किया था कि विषगुरु का एक और काम, धरना मना है। गौरतलब है कि संसद की परंपरा के अनुसार कोई भी प्रकाशित सामग्री, प्रश्नावली, पर्चे, तख्तियां, बैनर आदि स्पीकर की पूर्व अनुमति के बिना सदन में वितरित नहीं किए जा सकते हैं। ये प्रतिबंधित हैं।

राष्ट्रपति चुनाव

विधायकों को कराया जाएगा वोटिंग रिहर्सल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। भाजपा राष्ट्रपति चुनाव में एक-एक वोट को लेकर बेहद चौकन्नी है। पार्टी ने अपने विधायकों के लिए तीन दिन तक लखनऊ में रहने का व्हिप जारी किया है।

» इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान में मॉक ड्रिल और प्रशिक्षण

एनडीए की राष्ट्रपति पद उम्मीदवार द्रौपदी मुर्मू के लिए वोटिंग से पहले सभी को तीन दिन लखनऊ में रहना होगा। पार्टी के राष्ट्रपति चुनाव के लिए सभी का वोट, सही वोट का नारा दिया है। सही वोट के लिए सभी विधायकों को मॉक ड्रिल और प्रशिक्षण दिया जायेगा। इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान में उनके लिए मॉक ड्रिल आयोजित की गई है। सभी विधायकों को वोट डालने का रिहर्सल कराया जायेगा। इसके लिए मतदान की पूरी प्रक्रिया अपनाई जाएगी।

चुनावी गणित नहीं कैमिस्ट्री पर भाजपा का फोकस!

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। 2024 में होने वाले लोक सभा चुनाव में लगातार तीसरी बार सरकार बनाने के लक्ष्य को लेकर चल रही भाजपा ने एक साथ कई स्तरों पर चुनाव की तैयारी शुरू कर दी है। भाजपा की निगाहें खासतौर से लोक सभा की उन 144 सीटों पर लगी हुई है जिस पर भाजपा अभी तक जीत नहीं पाई है। लोकसभा की 144 सीटों की इस लिस्ट में वो सीटें भी शामिल हैं जिस पर भाजपा को पहले के चुनावों में एक-दो बार जीत तो हासिल हुई थी लेकिन 2019 में पार्टी को इन सीटों पर हार का सामना करना पड़ा था। ऐसे में सवाल उठता है कि 2024 में यूपी फतेह की क्या है भाजपा की रणनीति? इस मुद्दे पर वरिष्ठ पत्रकार केके उपाध्याय, सुशील दुबे, सैयद कासिम, राजेश बादल, डॉ. अनिल जयहिंद, तुलसीदास भोईटे और

4पीएम के संपादक संजय शर्मा ने एक लंबी परिचर्चा की।

4पीएम की परिचर्चा में उठे सवाल

परिचर्चा

रोज शाम को छह बजे देखिए 4PM News Network पर एक ज्वलंत विषय पर चर्चा

सुशील दुबे ने कहा कि इस समय राजनीतिक माहौल पूरी तरह बीजेपी के पक्ष में है। आज के परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो 80 में 75 सीटें भाजपा को मिलनी तय हैं। द्रौपदी मुर्मू की जीत लगभग पक्की हैं, राजभर, अनुप्रिया, निषाद सब तो बीजेपी के साथ आ गए हैं।

सैयद कासिम ने कहा विधान सभा चुनाव में चेहरा भी था, गल्ला भी था, बुलडोजर भी था फिर भी 70 सीटें घट गई हैं, भाजपा इससे पूरी तरह वाकिफ हैं। यूपी चुनाव के नतीजों को देखे तो लगभग 55 सीटें ऐसी है, जो राडार पर है जबकि बीजेपी वाले चर्चा कर रहे कि हमारी ये सीटें अभी खतरे में हैं। इन पर खास मेहनत करनी हैं।

डॉ. अनिल जयहिंद ने कहा बीजेपी का सबसे बड़ा फेलियर है आर्थिक मोर्चे पर है। राजनीति में कहा जाता कि जनता एक हद तक सहती है मगर पेट की भूख जिस दिन जाग जाती तो क्या से क्या हो जाता श्रीलंका इसका गवाह है।

केके उपाध्याय ने कहा भाजपा संगठन के एक बड़े नेता ने यूपी चुनाव से पहले मुझसे कहा था कि चुनाव गणित से नहीं, चुनाव कैमिस्ट्री से जीते जाते और वो कैमिस्ट्री हम जानते है कि जब जाट और मुस्लिम का गठबंधन होगा तो बाकी जातियों को हम एकजुट कर देंगे, नतीजा ये रहा कि 46 सीटें जीती, सिर्फ आठ सीटों का नुकसान हुआ तो ये हैं भाजपा।

राजेश बादल ने कहा 24 में जब चुनाव होगा तो हलचल मचाने वाले मुद्दे होंगे। जनता दो सालों में सब चीजों पर जरूर मथेंगी कि किन मुद्दों पर वोट देना हैं। हां, महिलाएं ज्यादातर भाजपा के पक्ष में है। तुलसीदास भोईटे भी परिचर्चा में शामिल हुए।

तीस्ता ने रची गुजरात सरकार गिराने की साजिश!

कोर्ट में एसआईटी का दावा, सोनिया के सचिव अहमद पटेल से लिए थे 30 लाख

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। 2002 के गुजरात दंगों के बाद एक्टिविस्ट तीस्ता सीतलवाड़ ने गुजरात के मुख्यमंत्री रहे नरेंद्र मोदी को बदनाम करने की साजिश रची थी। तीस्ता ने इसके लिए कांग्रेस की अंतरिम अध्यक्ष सोनिया गांधी के राजनीतिक सलाहकार रहे अहमद पटेल से 30 लाख रुपए लिए थे। गुजरात दंगों में तीस्ता के रोल की जांच कर रही एसआईटी ने कोर्ट में दिए हलफनामे में यह बात कही है। एसआईटी ने अपने एफिडेविड में कहा कि तीस्ता के साथ इस साजिश में उस वक्त गुजरात के डीजीपी रहे आरबी श्रीकुमार और पूर्व आईपीएस संजीव भट्ट भी शामिल थे।

इन लोगों ने गुजरात दंगों के बाद नरेंद्र मोदी की अगुआई वाली राज्य सरकार को अस्थिर करने की साजिश रची थी। अहमदाबाद सेशन कोर्ट में दाखिल एफिडेविट में एसआईटी ने कहा कि तीस्ता को कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी के सलाहकार अहमद पटेल से एक बार 5 लाख रुपए और एक बार 25 लाख रुपए मिले थे। गुजरात दंगा केस में जेल में बंद तीस्ता की तरफ से पेश जमानत याचिका का विरोध करते हुए एसआईटी ने यह बात कही। गुजरात एसआईटी ने तीस्ता को 25 जून को मुंबई में उनके घर से गिरफ्तार किया था। इस मामले में अहमद पटेल की बेटी मुमताज पटेल ने कहा कि गुजरात चुनाव से पहले तो ये होना ही था। इस मामले को 20 साल हो गए। मेरे पिता जिंदा थे तब कोई कार्रवाई क्यों नहीं की। चुनाव की वजह से ऐसे आरोप लगाए जा रहे हैं। पिछले डेढ़ साल से मेरे पिता को बदनाम किया जा रहा है। गुजरात में हर विधान सभा चुनाव से पहले कुछ न कुछ मुद्दा उछाला जाता है।

भाजपा बोली- कांग्रेस की साजिश सामने आई

एसआईटी के खुलासे के बाद बीजेपी ने कांग्रेस को निशाने पर लिया है। बीजेपी प्रवक्ता संबित पात्रा ने कहा कि गुजरात दंगे में जिस तरह कांग्रेस ने नरेन्द्र मोदी को बदनाम करने की साजिश रची परत दर परत उसकी सच्चाई सामने आ रही है। एसआईटी का एफिडेविट कहता है कि तीस्ता सीतलवाड़ और उनके साथी मानवता के तहत काम नहीं कर रहे थे। ये राजनीतिक मंसूबे के साथ काम कर रहे थे। संबित ने कहा सोनिया ने तीस्ता सीतलवाड़ का इस्तेमाल राहुल गांधी को प्रोमोट करने के लिए किया।

कांग्रेस ने कहा- भाजपा मरे हुए लोगों को भी नहीं छोड़ती

कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने कहा कि कांग्रेस भाजपा के आरोपों का सिरे से खंडन करती है। 2002 में सांप्रदायिक नरसंहार रोकने के लिए नरेंद्र मोदी ने जिस तरह की अनिच्छा दिखाई थी उसकी वजह से ही तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी ने उन्हें राजधर्म की याद दिलाई थी। प्रधानमंत्री की राजनीतिक बदले की मशीन उन मरे हुए लोगों को नहीं छोड़ती है, जो उनके विरोधी थे। एसआईटी अपने आका के इशारे पर नाच रही है, जहां कहा जाएगा वहीं बैठ जाएगी।

प्रमुख जिला मार्ग भी होंगे दो लेन चौड़े: जितिन प्रसाद

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

हर तीन दिन में एक सेतु पूरा करने का लक्ष्य

लखनऊ। लोक निर्माण मंत्री जितिन प्रसाद ने कहा कि राज्य राजमार्गों की तर्ज पर प्रदेश के सभी प्रमुख जिला मार्गों को भी दो लेन चौड़ा किया जाएगा। इसकी कार्ययोजना तैयार की जा रही है। लोक भवन में मीडिया से मुखातिब होते हुए लोक निर्माण मंत्री ने बताया कि प्रदेश में विभाग 1191 सेतु बना रहा है। इस साल हर तीन दिन में एक सेतु पूरा करने का लक्ष्य है।

गौरतलब है कि छोटे सेतु का निर्माण जहां लोक निर्माण विभाग करता है, वहीं बड़े सेतु राज्य सेतु निगम बनाता है। 2011 की जनगणना के आधार पर 250 से अधिक आबादी की 4,393 बसावटें अभी पक्के मार्ग से नहीं जुड़ी हैं। इनमें से 1087 बसावटों को 500 मीटर से कम लंबाई वाले पक्के मार्गों से जोड़ने का काम पंचायती राज्य/ग्राम्य विकास विभाग करेंगे। बाकी बसावटों को लोक निर्माण विभाग पक्के संपर्क मार्ग से जोड़ेगा। जितिन प्रसाद ने कहा मथुरा-वृंदावन क्षेत्र में 2500 करोड़ रुपये की लागत से ब्रज 84 कोसी परिक्रमा मार्ग का निर्माण कराया जाएगा। कंसल्टेंट चयन के बाद इसकी विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार करायी जा रही है। मार्गों के रखरखाव की नीति में बदलाव किया जाएगा। सड़कों को बनाने, चौड़ा और उनकी मरम्मत करने वाले ठेकेदार को ही पांच साल तक सड़क का रखरखाव भी करना होगा। पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर प्रदेश के हर मंडल के एक ब्लॉक में विभाग के स्वामित्व की सभी सड़कों, ग्रामीण मार्ग के लिए पांच वर्ष की कार्ययोजना तैयार की जा रही है।

पीएमएस डॉक्टरों के ट्रांसफर पर हाईकोर्ट ने मांगा जवाब

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के पीएमएस डॉक्टरों के तबादले में भारी गड़बड़ी के संबंध में पीएमएस ऑफिसर्स वेलफेयर एसोसियेशन यूपी द्वारा महासचिव डॉ. आर के सैनी के माध्यम से दायर याचिका में इलाहाबाद हाईकोर्ट की लखनऊ बेंच ने सरकार से जवाब मांगा है। अगली सुनवाई 26 को होगी। जस्टिस अलोक माथुर ने यह आदेश याची की अधिवक्ता डॉ नूतन ठाकुर तथा सरकारी अधिवक्ता को सुनने के बाद दिया।

नूतन ने कोर्ट को बताया कि स्थानांतरण सत्र 2022-23 में सरकारी डॉक्टरों के तबादलों में भारी गड़बड़ी हुई है। इसमें अधिकतम अवधि पूर्ण कर चुके डॉक्टरों का तबादला नहीं किया जाना, बिना अवधि पूर्ण किए डॉक्टरों का तबादला तथा डीजी चिकित्सा एवं स्वास्थ्य द्वारा बिना अधिकारिकता के लेवल 2, 3, 4 आदि के डॉक्टरों के तबादले शामिल हैं। उन्होंने बताया कि इस संबंध में स्वयं डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक ने भी आपत्ति जताई है। अत: याचिका में इन डॉक्टरों के तदाबले निरस्त करते हुए इसके लिए उत्तरदायित्व निर्धारित किये जाने तथा नए तबादले पूरी तरह तबादला नीति के अनुसार किये जाने की प्रार्थना की गयी है।

27 से पहले मुख्तार अंसारी के बेटे को पुलिस करेगी गिरफ्तार

» विधायक बेटे अब्बास अंसारी के खिलाफ गिरफ्तारी वारंट जारी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। मुख्तार अंसारी के विधायक बेटे अब्बास के खिलाफ एमपीएमएलए कोर्ट ने गिरफ्तारी वारंट जारी किया है। अब्बास पर धोखाधड़ी कर एक लाइसेंस पर कई हथियार खरीदने का आरोप है। ये वारंट एमपीएमएलए कोर्ट के विशेष एसीजेएम अम्बरीष श्रीवास्तव ने जारी किया है।

कोर्ट ने लखनऊ के महानगर थाना को अब्बास को 27 जुलाई तक गिरफ्तार करने के लिए मोहलत दी है। महानगर इंस्पेक्टर ने कोर्ट में रिपोर्ट दी थी। अब्बास के खिलाफ जमानती वारंट जारी है। अब्बास की तलाश में पुलिस टीम ने कई जगह पर छापामारी की। मगर आरोपी या उसके परिवार का कोई सदस्य नहीं मिला, लिहाजा नोटिस को चस्पा कर दिया गया है। इंस्पेक्टर महानगर कोर्ट से गुजारिश करते हुए गिरफ्तारी वारंट जारी करने के लिए कहा था। दस्तावेजों के मुताबिक महानगर थाना प्रभारी अशोक कुमार सिंह ने अब्बास के खिलाफ 12 अक्टूबर 2019 को रिपोर्ट दर्ज कराई थी। आरोप था कि मेट्रो सिटी निवासी अब्बास अंसारी ने 2012 में डीबीडीएल गन का लाइसेंस लिया था। डीबीडीएल का मतलब डबल बैरल ब्रीच लोड यानी शॉर्टगन से है। बाद में अब्बास ने अपना शस्त्र लाइसेंस दिल्ली के पते पर ट्रांसफर करवा लिया था।

राष्ट्रपति चुनाव: निर्वाचन आयोग की विशेष कलम से वोट डालेंगे सांसद व विधायक

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। राष्ट्रपति चुनाव 18 जुलाई को होंगे और 21 जुलाई को देश को नए राष्ट्रपति मिल जाएंगे। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद का कार्यकाल 24 जुलाई 2022 को खत्म हो रहा है। पिछली बार 17 जुलाई 2017 को राष्ट्रपति चुनाव हुए थे। राष्ट्रपतिको चुनने के लिए आम लोग वोटिंग नहीं करते हैं। इसके लिए जनता द्वारा चुने गए प्रतिनिधि और और उच्च सदन के प्रतिनिधि वोट डालते हैं। जैसे दोनों सदनों लोकसभा और राज्यसभा और राज्यों में विधानसभा और विधान परिषद के सदस्य राष्ट्रपति चुनाव में वोट डालेंगे।

उत्तर प्रदेश में मतदान की तैयारी पूरी हो गई है। राष्ट्रपति चुनाव में संसद और विधान सभा के निर्वाचित सदस्य भारत निर्वाचन आयोग की ओर से निर्धारित और उपलब्ध कराए गए कलम से ही मतपत्र पर अपना मत दर्ज कर सकेंगे। राजधानी लखनऊ में मतदान के लिए विधान भवन में पूरी व्यवस्था कर ली गई है। मतदान स्थल विधान भवन के तिलक हाल में बनाया गया है। राष्ट्रपति चुनाव में निर्वाचक कक्ष संख्या 80 में स्थापित टेबल से मतदान स्लिप प्राप्त करेंगे। यहां स्थापित टेबल क से लोक सभा तथा राज्य सभा के वे निर्वाचित सदस्य, जिन्हें निर्वाचन आयोग ने लखनऊ में मत देने के लिए अधिकृत किया है, मतदान स्लिप प्राप्त करेंगे। टेबल ख से विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र क्रम संख्या 01 से 136 तक, टेबल ग से विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र क्रम संख्या 137 से 271 तक और टेबल घ से विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र क्रम संख्या 272 से 403 तक के निर्वाचित सदस्य मतदान स्लिप प्राप्त कर सकेंगे। निर्वाचित विधायक और सांसद मतदान स्लिप व परिचय पत्र प्राप्त कर उत्तरी बरामदे से तिलक हाल में प्रवेश करेंगे। तिलक हाल में पहुंचने के बाद टेबल क पर रखी निर्वाचक नामावली में हस्ताक्षर करने के उपरांत संबंधित टेबल ख, ग व घ से मतपत्र प्राप्त करेंगे।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक **बबिता चतुर्वेदी** के लिए **4पीएम** आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ (यूपी) से मुद्रित एवं प्रकाशित। **प्रधान संपादक**- अर्चना दयाल, **संपादक** - संजय शर्मा, **स्थानीय संपादक** - सूर्यकांत त्रिपाठी*, **विधि सलाहकार**: सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, **वित्तीय सलाहकार**: संदीप बंसल, **कार्टूनिस्ट**: हसन जैदी, **दूरभाष**: 0522- 4078371 | **Email**: daily4pm@gmail.com | **website**: www.4pm.co.in | **RNI-UPHIN/2015/62233** डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।